|| ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः ||

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 11 अंक : 126 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका नवम्बर– 2018 30/–प्रति

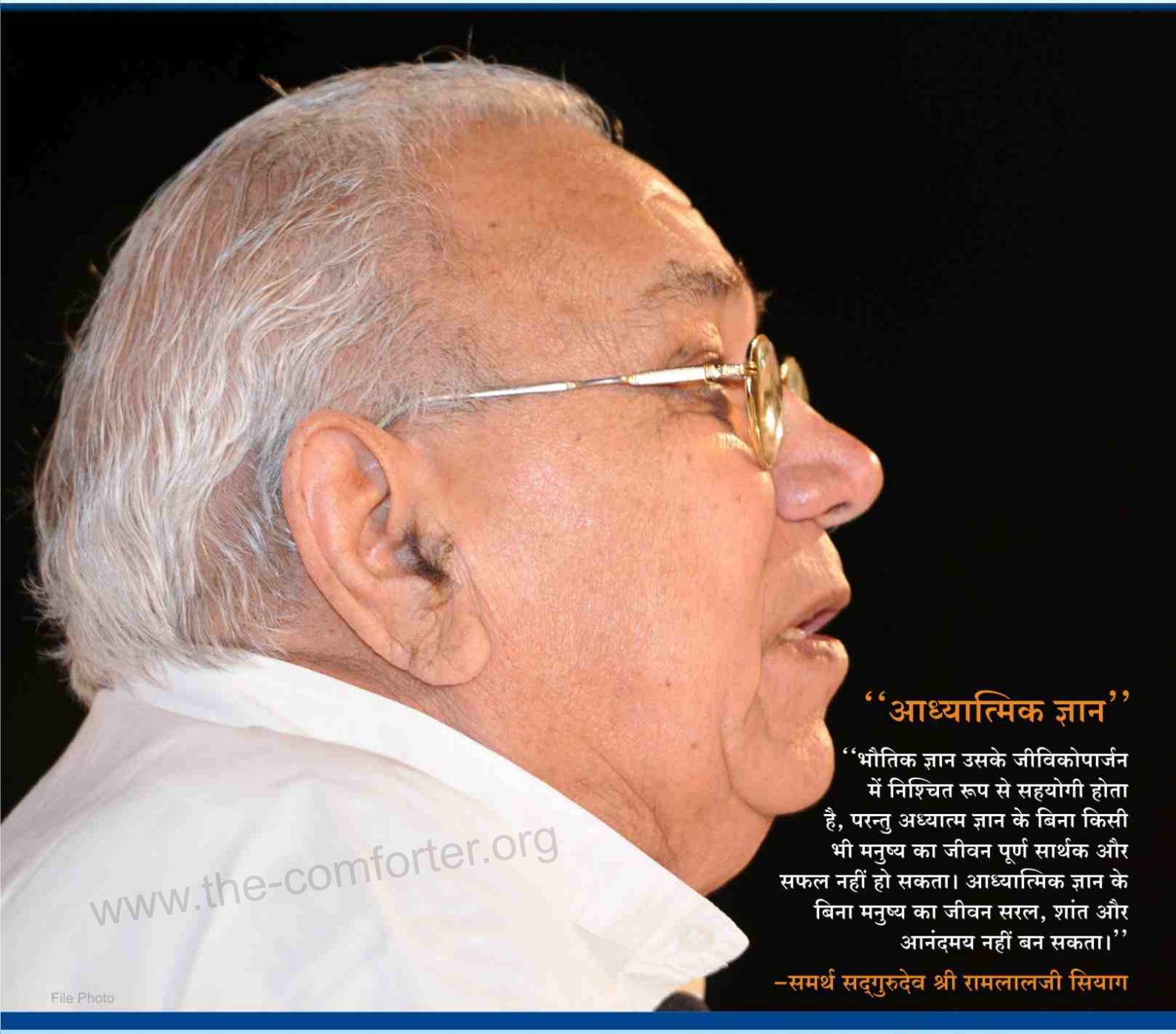

File Photo

www.the-comforter.org

''आध्यात्मिक ज्ञान''

''भौतिक ज्ञान उसके जीविकोपार्जन में निश्चित रूप से सहयोगी होता है, परन्तु अध्यात्म ज्ञान के बिना किसी भी मनुष्य का जीवन पूर्ण सार्थक और सफल नहीं हो सकता। आध्यात्मिक ज्ञान के बिना मनुष्य का जीवन सरल, शांत और आनंदमय नहीं बन सकता।''

–समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

जोधपुर आश्रम टीम द्वारा सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (23-24 अक्टूबर 2018)

जोधपुर जिले की लूणी तहसील व बाड़मेर के कल्याणपुर कस्बे के विभिन्न विद्यालयों में ध्यान सिद्धयोग शिविर आयोजित।

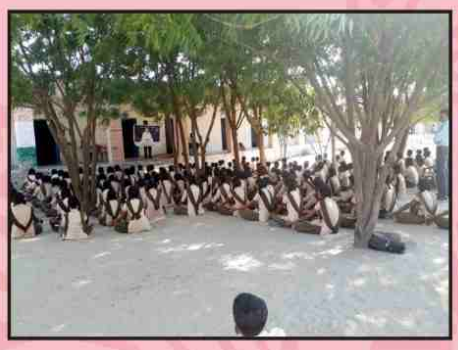

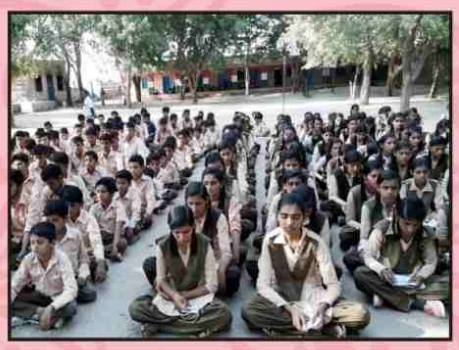

''ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः''

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

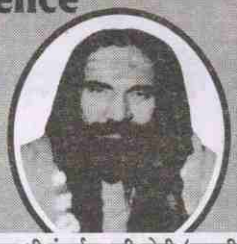

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 11 अंक : 126 जोधपुर:- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका नवम्बर – 2018

वार्षिक 300/- द्विवार्षिक : 600/- आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग
(ब्रह्मलीन)

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र

पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत

9784742595

E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

न्यूटन की आखिरी इच्छा....4
विश्व शांति (सम्पादकीय)....5
अवतरण दिवस (24 नवम्बर 2018)....6
कल्कि अवतार का अवतरण....7
अवतार....8
हिन्दू धर्म में वर्णित दस अवतार....9
अवतार की संभावना और हेतु....10
सद्गुरुदेव का प्रवचन....11
Religious Revolution in the World....12
विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध....13
हृदय मंथन....14
मेरे गुरुदेव....15
योग के बारे में....16
योग के आधार....17
संस्था के उद्देश्य....18
चित्र पृष्ठ....19–22
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति....23–26
मनुष्य और विकास....27
श्री कृष्ण का आदेश....28
दिव्य प्रेम....29
युग परिवर्तन अनिवार्य है....30–31
અદ્ભૂત સિદ્ધયોગ....32
सद्गुरुदेव की सर्वव्यापकता....33
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से....34
सिद्धयोग....35
शेष पृष्ठ सम्पादकीय....36–37
ध्यान विधि....38

www.the-comforter.org

।।ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः।।

अमृतवाणी

मैं न्यूटन की आखिरी इच्छा को पूर्ण करने आया हूँ

मैं न्यूटन की आखिरी इच्छा को पूर्ण करने आया हूँ।

उसने कहा था — "मैं जब अपने पूरे जीवन पर नजर डालता हूँ तो पाता हूँ कि मैं एक अबोध बालक की तरह समुद्र के किनारे सीपियाँ, समुद्री घोंघों की हड्डियाँ ही चुनता रहा। अब मैं अन्तिम समय में जब उस विशाल समुद्र को देखता हूँ तो सोचता हूँ कि मैंने कुछ भी नहीं प्राप्त किया। इस विशाल समुद्र की खोज से ही शान्ति सम्भव होगी।"

यही नहीं मैं उन्हें उस तत्व की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार करवाने आया हूँ जिसकी खोज हमारे ऋषि-मुनियों ने की थी। उन्होंने इस भौतिक सूर्य जैसे लाखों सूर्य देखे। इसके अतिरिक्त उन्होंने देखा कि एक ऐसा ऊर्जा का पुञ्ज है जो इन लाखों सूर्यों को प्रकाशित कर रहा था। उन्होंने उस तत्व का जो ज्ञान प्राप्त किया मैं उसकी प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार करवाने संसार में निकला हूँ।

यह ज्ञान मुझे मेरे संत सद्गुरु देव बाबा श्री गंगाईनाथ जी महाराज की अहैतुकी कृपा के कारण ही प्राप्त हुआ है। अतः मैं इसे गुरु प्रसाद की संज्ञा देता हूँ।

श्री लाल चौधरी
13/01/1991

www.the-comforter.org

सम्पादकीय .....

"विश्व-शांति"

"विश्व शांति के लिए सभी बहिर्मुखी बौद्धिक प्रयास असफल हो चुके हैं, क्योंकि शांति अंदर से आती है; शांति का संबंध दिल से है। अतः "अन्तर्मुखी आराधना" द्वारा उस परमसत्ता से जुड़े बिना, शांति असंभव है।"

-सद्गुरुदेव सियाग

आज पूरे विश्व में शांति के भरसक प्रयास किये जा रहे हैं। वैज्ञानिक व राजनीतिज्ञ बाहरी प्रयासों व हथियारों से शांति स्थापित करने में लगे हुए हैं। अशांति उतनी ही तेज गति से बढ़ रही है। वर्तमान मानव शांति का प्रयास बाहर ढूँढ़ रहा है **जबकि असीम शांति का अकूट भण्डार तो मानव के भीतर है।**

इस संबंध में **"पवित्र ग्रंथ बाइबल की भविष्यवाणियाँ"** पुस्तक में **सद्गुरुदेव सियाग** ने वर्षों पहले लिख दिया है कि यदि मानव संपूर्ण विश्व में शांति चाहता है तो उसे अपने भीतर की गहराइयों में उतरना पड़ेगा और उसका पथ है सिद्धयोग में समर्थ सद्गुरुदेव द्वारा बताई गई आराधना। **"जब तक संसार में मनुष्य शरीर-रूपी सुन्दर ग्रंथ को पढ़ने का दिव्य विज्ञान प्रकट नहीं होगा, तब तक विश्व शांति का भाव "मृगमरीचिका" ही बना रहेगा।"**

पुस्तक की प्रस्तावना के 'दो शब्दों' में विस्तार से लिखा है-

संसार में धार्मिक ग्रन्थों की संख्या अन्य ग्रन्थों से अधिक हैं और उनका पठन-पाठन भी सबसे अधिक होता है परन्तु फिर भी सम्पूर्ण विश्व में अशांति का एक छत्र साम्राज्य है। दूसरी तरफ शांति के लिए जितने प्रयास किए जाने चाहिए, भौतिक-विज्ञान के आचार्य कर चुके, तथा पूरी तरह से असफल भी हो चुके हैं। जिन विध्वंसक हथियारों के बनाने में वे असीम धन खर्च कर चुके हैं, प्रायः उतना ही धन अब उनको नष्ट करने में लगेगा। क्या घातक हथियार नष्ट भी किए जा सकेंगे या नहीं, यह प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। **इनको नष्ट करने में जितना समय और धन लगने का हिसाब लगाया गया है,उससे तो यही तथ्य प्रकट होता है कि ये हथियार जिस कार्य के लिए बनाए गए है, उसी में प्रयोग होंगे।** घातक हथियारों द्वारा स्थापित,भय मिश्रित-शांति, सर्वनाश का कारण ही सिद्ध होगी।

धर्म के बारे एक व्याख्या मुझे पूर्ण सत्य लगती है, वह है:-

'धर्म का प्रमाण किसी ग्रंथ पर नहीं, मनुष्य की रचना की सत्यता पर निर्भर है। ग्रंथ तो मनुष्य की रचना के बर्हिगमन हैं, बौद्धिक परिणाम हैं, मनुष्य ही इन ग्रंथों के प्रणेता हैं।' इससे एक बात स्पष्ट होती है कि जब तक संसार में मनुष्य शरीर-रूपी ग्रंथ को पढ़ने का दिव्य विज्ञान प्रकट नहीं होता,शांति पूर्ण रूप से असम्भव है। हम देख रहे हैं, संसार में बौद्धिक प्रयासों द्वारा शांति स्थापित करने के सभी प्रयास असफल हो चुके हैं। वैज्ञानिकों ने जो हथियार मानव की सुरक्षा और शांति के लिए बनाये थे, उन्हीं से मानव अब अधिक भयभीत हैं। सभी उन्हें अतिशीघ्र नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं, परन्तु

संसार में धार्मिक ग्रन्थों की संख्या अन्य ग्रन्थों से अधिक हैं और उनका पठन-पाठन भी सबसे अधिक होता है परन्तु फिर भी सम्पूर्ण विश्व में अशांति का एक छत्र साम्राज्य है। दूसरी तरफ शांति के लिए जितने प्रयास किए जाने चाहिए, भौतिक-विज्ञान के आचार्य कर चुके, तथा पूरी तरह से असफल भी हो चुके हैं। जिन विध्वंसक हथियारों के बनाने में वे असीम धन खर्च कर चुके हैं, प्रायः उतना ही धन अब उनको नष्ट करने में लगेगा। क्या घातक हथियार नष्ट भी किए जा सकेंगे या नहीं, यह प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। **इनको नष्ट करने में जितना समय और धन लगने का हिसाब लगाया गया है,उससे तो यही तथ्य प्रकट होता है कि ये हथियार जिस कार्य के लिए बनाए गए है, उसी में प्रयोग होंगे।** घातक हथियारों द्वारा स्थापित,भय मिश्रित-शांति, सर्वनाश का कारण ही सिद्ध होगी।

शेष पृष्ठ 36 व 37 पर...

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

(24 नवम्बर 1926)

का 93 वाँ

अवतरण दिवस

शनिवार, 24 नवम्बर 2018 को सुबह 10.30 बजे जोधपुर आश्रम में मनाया जाएगा।

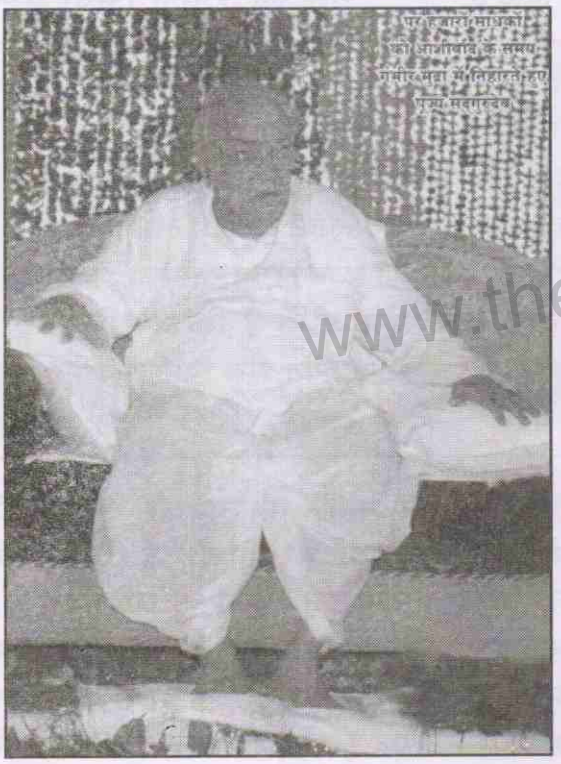

"24 नवम्बर 1926 के दिन भौतिक में श्री कृष्ण का अवतरण हुआ था। श्री कृष्ण अतिमानसिक ज्योति नहीं हैं। श्री कृष्ण के अवतरण का मतलब है-अधिमानसिक देव का अवतरण जो अपने-आप तो वास्तव में अतिमानसिक नहीं है पर अतिमन और आनंद के अवतरण के लिये तैयारी कर रहे हैं।

कृष्ण आनंदमय है, वे आनंद की ओर अभिमुख विकास को अधिमानस के द्वारा सहारा देते हैं।"

-महर्षि श्री अरविन्द घोष द्वारा
8 अक्टूबर 1935 को घोषणा
संदर्भ-श्री अरविन्द आश्रम से प्रकाशित
'लाल कमल' पुस्तक पृष्ठ-154 पर

www.the-comforter.org

इस पावन वेला में समस्त जिज्ञासुगण सादर आमंत्रित हैं।

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

कल्कि अवतार का अवतरण

(24 नवम्बर 1926)

जोधपुर आश्रम में संन्ध्याकालीन ध्यान कार्यक्रम के दौरान एक वार्तालाप में सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के कल्कि अवतार के संबंध में दिव्यांश

जोधपुर आश्रम-गुरुवार, 5 जुलाई 2012

''आप चाहे दिल्ली, मुम्बई, कलकत्ता, अमेरिका कहीं भी रहो, मेरी तस्वीर के सामने प्रार्थना करो, आपका ध्यान लग जाएगा। मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है, राम और कृष्ण की तस्वीर से नहीं ! ''

''मैं बृहस्पतिवार को दीक्षा देता हूँ। मैं राधा और कृष्ण के मंत्र की दीक्षा देता हूँ, इस मंत्र को जपोगे तो आपकी कुण्डलिनी जाग्रत हो जाएगी। ''

अब तक नौ अवतार हो चुके हैं । दसवाँ अवतार मैं हूँ , मैं कल्कि अवतार हूँ।

www.the-comforter.org

मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है। अब यहाँ (आज्ञाचक्र) पर मुझे देखो और ध्यान करो। मन ही मन इस मंत्र को जपो, बिना होठ जीभ हिलाए। ध्यान सुबह-शाम करना होता है, खाली पेट। सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के बाद। सुबह जल्दी उठकर करो; 15 मिनट से ज्यादा नहीं। ध्यान ज्यादा करोगे तो आगे परेशानी हो जाएगी। (शरीर में गर्मी बढ़ जाएगी। हमारे ऋषि-मुनि हिमलाय पहाड़ की कन्दराओं में क्यों जाते थे ? इस कारण नहीं कि वहाँ भगवान् घुसा बैठा है जो जाते ही मिल जाएगा। इसलिए कि शरीर गर्मी को सहन कर सके। वे बर्फ की शिलाओं पर नंगे बदन बैठते थे।) मंत्र जप हर समय करो, **(Round the Clock).** नाम जप से ही आपका कल्याण होगा।''

-द्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

! ! अवतार ! !

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।4:7।।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।4:8।।गीता

(हे भारत ! जब जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ। साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिये और दुषित कर्म करने वालों का 'नाश' करने के लिये तथा 'धर्म स्थापना' करने के लिये युग युग में प्रकट होता हूँ।)

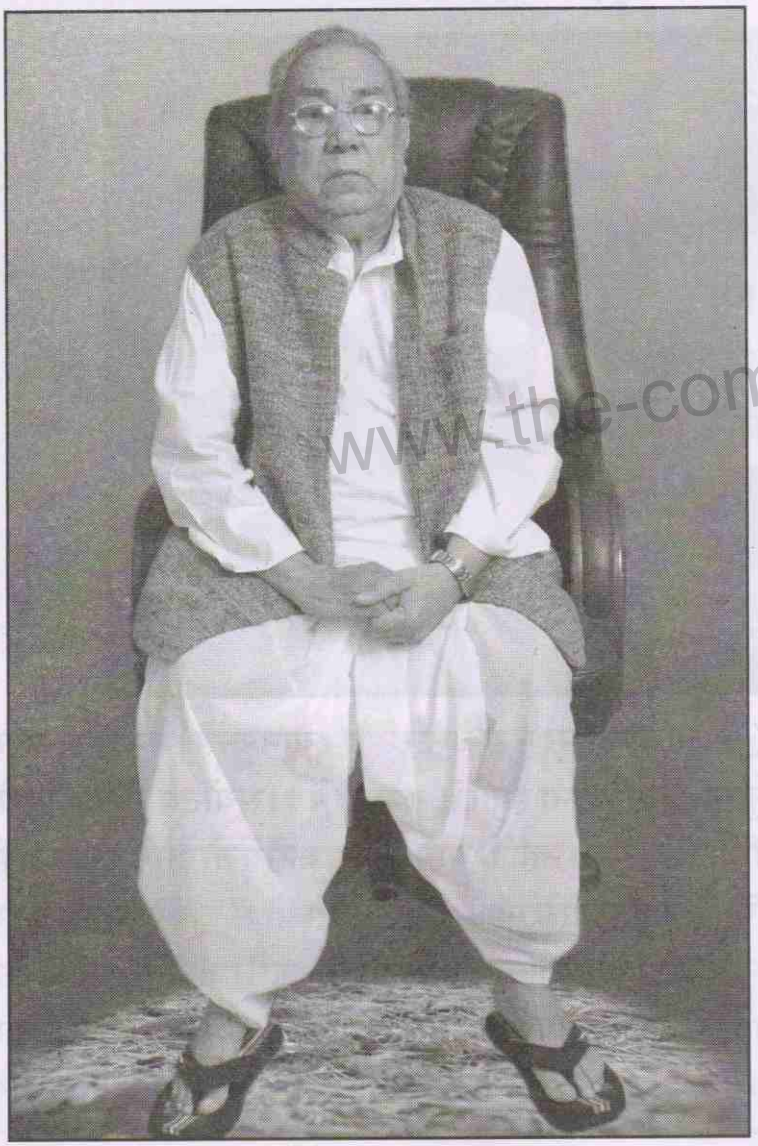

''अवतार स्पष्ट रूप से मनुष्य जैसे ही होते हैं। अवतार के सदा दो रूप होते हैं-**भागवत रूप** और **मानव रूप**। भगवान् मानव प्रकृति को अपना लेते हैं, उसे सारी बाह्य सीमाओं के साथ भागवत चैतन्य और भागवत शक्ति की परिस्थिति, साधन और कारण तथा '**दिव्य जन्म**' और '**दिव्य कर्म**' का एक पात्र बना लेते हैं और यही होना चाहिए, वरना अवतार के अवतरण का उद्देश्य ही पूर्ण नहीं हो सकता।''

-महर्षि श्री अरविन्द घोष

www.the-comforter.org

हिन्दू धर्म (सनातन धर्म) में वर्णित दस अवतार

(1) मत्स्य अवतार

(1) MATSYA AVTARA

(2) कच्छप अवतार

(2) KACCHAP AVTARA

(3) वाराह अवतार

(3) VARAH AVTARA

(4) नरसिंह अवतार

(4) NARSINGH AVTARA

(5) मनु अवतार

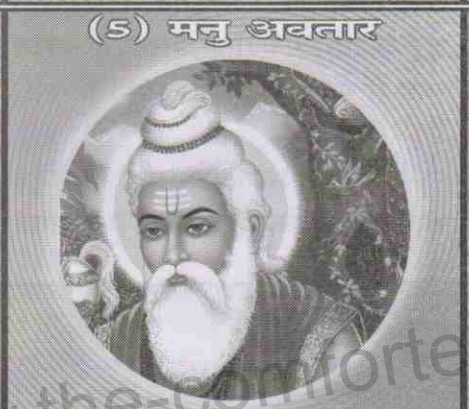

(5) MANU AVTARA

(6) वामन अवतार

(6) VAMANA AVTARA

www.the-comforter.org

(7) परशुराम अवतार

(7) PARSHURAM AVTARA

(8) राम अवतार

(8) RAM AVTARA

(9) कृष्ण अवतार

(9) KRISHNA AVTARA

हिन्दू अवतारों की श्रृंखला

अपने आप में मानों क्रम विकास का रूपक है

1. सर्वप्रथम 'मत्स्यावतार' हुआ। जिसके माध्यम से जल में जीवों का सृष्टि विकास हुआ। 2. फिर पृथ्वी पर थल व जल के स्थल-जलचर 'कच्छप' का अवतरण हुआ। 3. तृतीय अवतार 'वाराह' के साथ पृथ्वी पर पशु-पक्षियों की सृष्टि हुई। 4. 'नृसिंह' अवतार पशुओं व मनुष्यों के मध्य की स्थिति को स्पष्ट करता है। फिर 5वें 'मनु', 6वें 'वामन', 7वें 'परशुराम', 8वें 'राम' और 9वें श्री कृष्ण आदि अवतरित हुए जो निरन्तर प्राणमय राजसिक से सात्विक मानसिक, मानस और अधिमानस तक ले जाने के माध्यम बने।

(10) 'कल्कि' अवतार

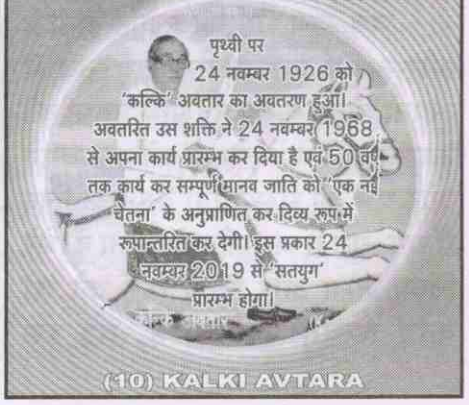

(10) KALKI AVTARA

गतांक से आगे...

अवतार की संभावना और हेतु

पर वहाँ उन्होंने इस बात को अच्छी तरह स्पष्ट नहीं किया था। अब वे अपने-आपको स्पष्ट शब्दों में अवतार घोषित करते हैं। भगवान्, गुरु की चर्चा के प्रसंग में वेदांत की दृष्टि से अवतार-तत्त्व का प्रतिपादन संक्षेप में किया जा चुका है। गीता भी इस तत्त्व को वेदांत की ही दृष्टि से हमारे सामने रखती है। अब हम इस तत्त्व को जरा और अन्दर पैठकर देखें और उस दिव्य जन्म के वास्तविक अभिप्राय को समझें जिसके बाह्य रूप को ही अवतार कहते हैं, क्योंकि गीता की शिक्षा में यह चीज एक ऐसी लड़ी है जिसके बिना इस शिक्षा की श्रृंखला पूरी नहीं होती।

सबसे पहले हम श्रीगुरु के उन शब्दों का अनुवाद करके देखें जिनमें अवतार के स्वरूप और हेतु का संक्षेप में वर्णन किया गया है और उन श्लोकों को या वचनों को भी ध्यान में ले आवे जो उससे सम्बन्ध रखते हैं।

''हे अर्जुन, मेरे और तेरे बहुत से जन्म बीत चुके हैं; मैं उन सबको जानता हूँ, पर तू नहीं जानता। हे परंतप, मैं अपनी सत्ता से यद्यपि अजर और अविनाशी हूँ, सब भूतों का स्वामी हूँ तो भी अपनी प्रकृति को अपने अधीन रखकर आत्म-माया से जन्म लिया करता हूँ।

जब-जब धर्म की ग्लानि होती है और अधर्म का उत्थान, तब-तब मैं अपना सृजन करता हूँ। साधु पुरुषों को उबारने और पापात्माओं को नष्ट करने और धर्म की संस्थापना करने के लिए मैं युग-युग में जन्म लिया करता हूँ। **मेरे दिव्य जन्म और दिव्य कर्म को जो कोई तत्त्वतः जानता है, वह इस शरीर को छोड़ने पर पुनर्जन्म को नहीं, बल्कि, हे अर्जुन, मुझको प्राप्त होता है।** राग, भय और क्रोध से मुक्त, मेरे ही भाव में लीन, मेरा ही आश्रय लेनेवाले, ज्ञानतप से पुनीत अनेकों पुरुष मेरे भाव को (पुरुषोत्तम-भाव को) प्राप्त हुए हैं। जो जिस प्रकार मेरी ओर आते हैं, उन्हें मैं उसी प्रकार प्रेमपूर्वक ग्रहण करता हूँ (भजामि); हे पार्थ, सब मनुष्य सब तरह से मेरे ही पथ का अनुसरण करते हैं।''

गीता अपना कथन जारी रखते हुए बतलाती है कि बहुत से मनुष्य अपने

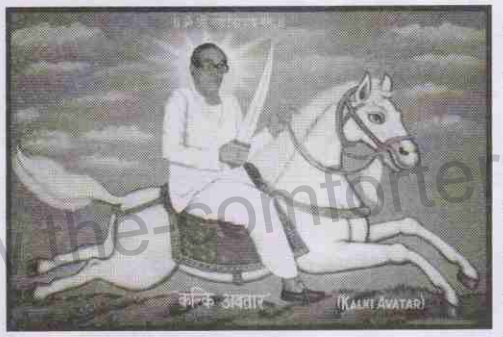

कर्मों की सिद्धि चाहते हुए, देवताओं के अर्थात् एक परमेश्वर के विविध रूपों और व्यक्तित्वों के प्रीत्यर्थ यज्ञ करते हैं, क्योंकि कर्मों से-ज्ञानरहित कर्मों से-होनेवाली सिद्धि मानव-जगत् में सुगमता से प्राप्त होती है, वह केवल उसी जगत् की होती है। परन्तु दूसरी सिद्धि, अर्थात् पुरुषोत्तम के प्रीत्यर्थ किये जानेवाले ज्ञानयुक्त यज्ञ के द्वारा मनुष्य की दिव्य आत्मपरिपूर्णता, उसकी अपेक्षा अधिक कठिनता से प्राप्त होती है; इस यज्ञ के फल सत्ता की उच्चतर भूमिका के होते हैं और जल्दी पकड़ में नहीं आते।

इसलिए मनुष्यों को अपने गुण-कर्म के अनुसार चतुर्विध धर्म का पालन करना पड़ता है और सांसारिक कर्म के इस क्षेत्र में वे भगवान् को उनके विविध गुणों में ही ढूँढ़ते हैं। परन्तु भगवान् कहते हैं कि यद्यपि मै चतुर्विध कर्मों का कर्ता और चातुर्वर्ण्य का स्रष्टा हूँ तो भी मुझे अकर्ता, अव्यय, अक्षर आत्मा भी जानना चाहिए। ''कर्म मुझे लिप्त नहीं करते, न कर्मफल की मुझे कोई स्पृहा है। कारण भगवान् नैर्व्यक्तिक हैं और इस अहंभावापन्न व्यक्तित्व के तथा प्रकृति के गुणों के इस द्वन्द्व के परे हैं, और अपने पुरुषोत्तम-स्वरूप में भी, जो उनका नैर्व्यक्तिक पुरुषभाव है, वे कर्म के अन्दर रहते हुए भी अपनी इस परम स्वतंत्रता पर अधिकार रखते हैं।

इसलिए दिव्य कर्मों के कर्ता को चातुर्वर्ण्य का पालन करते हुए भी उसी को जानना और उसी में रहना होता है जो परे है, जो नैयक्तिक है और फलतः परमेश्वर है। भगवान् कहते हैं **''इस प्रकार जो मुझे जानता है, वह अपने कर्मों से नहीं बँधता।** यही जानकर मुमुक्षु लोगों ने पुराकाल में कर्म किया; इसलिए तू भी उसी पूर्वतर प्रकार के कर्म कर जैसे पूर्वपुरुषों ने किये थे।''

जिन श्लोकों का अनुवाद ऊपर दिया गया है, उनमें से पीछे के श्लोक, जिनका सारांश-मात्र दिया गया है, **'दिव्य कर्म'** का स्वरूप बतलाने वाले हैं और उसका निरूपण हम पिछले अध्याय में कर चुके हैं; और उनमें से पहले के श्लोक, जिनका संपूर्ण अनुवाद दिया गया है, वे **'दिव्य जन्म'** अर्थात् अवतारतत्त्व का प्रतिपादन करने वाले हैं।

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

पातंजलि योग दर्शन एक छोटा सा ग्रंथ है, इसमें195 सूत्र हैं। अब तो लोग जानते होंगे मगर पहले बहुत कम लोगों को इस ग्रंथ की जानकारी थी और पातंजलि ऋषि ने 195 सूत्र में मनुष्य को 'केवल्य पद' तक पहुँचा दिया है। वैसे आप पातंजलि योग दर्शन पढ़ोगे तो आपको एक तिलिस्मी उपन्यास जैसा लगेगा क्योंकि इसमें ऐसे-ऐसे परिवर्तन की बात कही गई है, जो मानव के दिमाग को यह स्वीकार ही नहीं है ! ऐसा कैसे संभव है ? मगर जब मैं जो दीक्षा देता हूँ, उसके बाद में आप जो आराधना करोगे तो पातंजलि योग दर्शन में वर्णित सभी सिद्धियाँ मेरे साधकों को हो रही हैं। उसमें जितनी भी सिद्धियों का वर्णन हैं और सभी प्रकार के परिवर्तन मेरे लाखों शिष्यों में आ रहे हैं।

मैं पिछले दस साल से यहीं (जोधपुर में) हूँ तो यहीं काम कर रहा हूँ। हो गए होंगे चार-पाँच लाख शिष्य और सब में परिवर्तन आ रहा है। पातंजलि योग दर्शन में वर्णित सारी सिद्धियाँ प्राप्त हो रही हैं। स्वतः हो रही है केवल नाम जप से तो मैं आपको जो नाम बताऊँगा उसको जपना है।

इसमें आराधना के दो तरीके हैं-एक नाम जप। अब नाम जप में भी तीन प्रकार की मोटे तौर से प्रक्रिया होती है-एक तो जैसे उच्चारण करके जपो, एक में होंठ-जीभ तो हिलते हैं, मगर आवाज नहीं निकलती है और तीसरा प्रकार है-उसमें मुँह बिल्कुल बंद रहता है। जीभ का प्रयोग बिल्कुल नहीं, मन ही मन जपा जाता है। जैसे बिना बोले आप किताब पढ़ते हो तो मैं जो बताऊँ उसको मन ही मन जपना है-चौबीस घंटे। अब समझोगे बड़ी समस्या कर दी कि चौबीस घंटे कैसे जपा जायेगा ? तो जप एक विज्ञान है, जप विज्ञान में एक Trems (निबंधन) है अजपा जाप। बुजुर्ग लोग शायद जानते हैं, युवा लोगों को नहीं मालुम है कि अजपा जाप क्या होता है ?

रैदास जी के एक भजन से वो स्थिति बड़ी स्पष्ट होती है। रैदास जी ने एक भजन में गाया-''अब कैसे छूटे नाम रट लागी, अब कैसे छूटे नाम रट लागी।'' मतलब वो नाम जपने से वो अजपा जाप शुरू हो गया वो चाहे तो बन्द नहीं होगा। 15-20 दिन गंभीर होकर के, सिरियस होकर के नाम जप करलो और काम करते जाइये। दिन में 10-20 दफे ध्यान करलो, जपा जा रहा है कि नहीं जपा जा रहा है। वो अजपा शुरू हो जायेगा फिर बन्द नहीं होगा, चाहोगे तो बन्द नहीं होगा। नींद में उठोगे तो मालूम होगा कि कोई जप रहा है। अन्दर बैठा जपने वाला कोई दूसरा ही है उसने अपनी ड्यूटी ले ली तो ये याद रखकर के जपने की समस्या से पीछा छूट जायेगा।

दूसरा काम है ध्यान का। अब योग की भाषा में, जो ब्रह्माण्ड में है, वो सारा पिण्ड में है और जो पिण्ड में वही ब्रह्माण्ड में है। जब सारा ब्रह्माण्ड ही आप में है तो 'देव' और 'दानव' सारे आप में हैं। और वो सबका रचयिता भी आप में है। तो फिर आप शरीर के किस हिस्से में ध्यान करो तो हमारे ऋषियों ने, योगियों ने-मनुष्य शरीर को मोटे तौर से दो भागों में बाँटा हैं। एक यहाँ (आज्ञाचक्र) से नीचे-नीचे का (पॉर्सन) हिस्सा जो है, नौ द्वार की आराधना है। माया की आराधना है। इस क्षेत्र में 'विद्या' पर 'अविद्या' का साम्राज्य है और यहाँ (आज्ञाचक्र) दसवाँ द्वार है।

आपने शिव की कई तस्वीरों में तीसरी आँख देखी होगी, वो आँख अंदर खुलती है। बाकी सारी इन्द्रियाँ बहिर्मुखी हैं। यहाँ पर (ललाट, भौहों के मध्य) ध्यान करना होता है, इसे आज्ञाचक्र कहते हैं। यहाँ तीन नाड़ियाँ इक्कठी होती हैं। नीचे रीड की हड्डी के आखिरी-आखिरी हिस्से में कुण्डलिनी सुषुप्ति में रहती है उससे अलग होती है, उसको 'मुक्त त्रिवेणी' कहते हैं। (आज्ञाचक्र की ओर इशारा) इसको 'संगम' कहते हैं। यह यहाँ (आज्ञाचक्र) असली प्रयागराज है। यहाँ तीनों नाड़ियाँ इकट्ठी होती हैं-ईड़ा, पिंगला, सुषुमना कह दो। गंगा, यमुना, सरस्वती कह दो। नाम कुछ भी कह लो; तीनों का संगम हैं, यही दसवाँ द्वार है। यह जब खुल जायेगा ना तो आप अन्दर चले जाओगे। बाकी सारे दरवाजे बाहर खुलते हैं इसलिए उनमें अन्दर जाने का कोई तरीका ही नहीं है। एकमात्र दसवाँ द्वार खुलता है तो सारी समस्याओं का अन्त हो जाता है। इसलिए यहाँ (आज्ञाचक्र) ध्यान करना होता है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

Religious Revolution in the World

Shaktipat is therefore a process by which a siddha guru (a spiritually empowered master) awakens this dormant Shakti in a seeker's body. The awakening of this shakti, which is called Kundalini, marks the initiation of a seeker into Siddha Yoga. A seeker who is so initiated then becomes the disciple of the guru who awaken his Kundalini. Guru Siyag therefore says that a guru does not give or pass on a spritual consciouness to his disciple.

A guru doing shaktipat is like a lighted lamp which lights another lamp, which has got all the necessary fittings ready and is waiting for a catalyst to light it up. So guru here becomes the catalyst who lights the spiritual lamp in a disciple and shows him the true path leading to his (disciple's) spiritual evolution to the fullest.

A siddha guru can carry out the shaktipat process through any of the following four methods:

Physical touch: A siddha guru can awaken Kundalini by simply touching a seeker. A guru may do this by placing his hand on the head or by touching the centre of the seeker's forehead. According to the mythological text Mahabharata, Lord Krishna initiated his favorite devotee Arjuna, the warrior Pandava, into yoga by hugging him and holding him close to his heart for a moment. Krishna initiated another legendary devotee, Dhruva by lightly touching his (Dhruva's) cheek with his conch, say the Puranas.

By sight: A guru may initiate the seeker by simply looking into the eyes of the seeker with the intention of awakening his Kundalini. Indian spiritual literature is replete with anecdotes about various Siddha Gurus awakening their followers' shakti by merely looking at them with compassion.

l Divine word: A guru may awaken a seeker's Kundalini by giving him a divine word or a mantra to chant. Here the word is divine because it is charged with the cosmic consciouness embodied by Guru. The mantra acts as a trigger to awaken the dormant Kundalini and prods her constantly to rise through the seeker's body, purify it and make it ready for his further spiritual evolution.

Making a resolve: This is the rarest mode of Kundalini awakening because here the initiative lies with the seeker and not with the guru. A seeker in this method doesn't approach the guru for a formal initiation for Kundalini awakening.

He merely makes a rock-solid resolve, described as Sankalpa, to get initiated by the guru he wishes to follow. Since the guru is the very embodiment of divine cosmic consciousness, the seeker's strong resolve is instantly received by the guru. Sankalpa is the manifestation of the seeker's total devotion or surrender of his ego to Guru.

Count. to Next Edition...

www.the-comforter.org

विरोधी शक्तियों का प्रतिरोध

विरोधी शक्तियों को आक्रमण करने के लिये किसी कारण की आवश्यकता नहीं होती-सामर्थ्य होने पर वे कभी भी और किसी पर भी आक्रमण कर देती हैं। मनुष्य को देखना यह है कि उसकी सत्ता की कोई भी वस्तु उनको प्रत्युत्तर न दे या उन्हें अन्दर न घुसने दे।

तुम पूछते हो कि क्या विरोधी शक्तियाँ दिव्य शक्ति से भी अधिक बलवान् हैं? तो इसका तात्पर्य यह हुआ कि मनुष्य का अपने कर्म के लिये कोई उत्तरदायित्व नहीं और वह जो भी कर्म करता है या किसी भी तरह की भूल करता है और किसी भी फल को पाता है तो दोष दिव्य शक्ति का ही होता है। ऐसा हो सकता है, किन्तु उस अवस्था में साधना करने की कोई आवश्यकता या उपयोगिता ही नहीं। मनुष्य को केवल शान्त बैठना है और विरोधी शक्तियाँ, दिव्य शक्ति को मनमानी करने देना है। इस सिद्धान्त के अनुसार, शैतान ने ईसा को जो कहा था वह बिलकुल ठीक ही था, तुम इस पहाड़ पर से कूद पड़ो और भगवान् के दूत आकर तुम्हारा उद्धार करें, और ईसा को इस सुझाव को अस्वीकार करना और यह कहना बिलकुल गलत था कि शास्त्रों में लिखा है 'तुम्हें प्रभु की, अपने देवता की परीक्षा नहीं करनी चाहिये। उसे कूद पड़ना चाहिये था और यदि उसकी हड्डी-पसली टूट जाती तो इससे केवल यही सिद्ध होता कि विरोधी शक्तियाँ, दिव्य शक्ति से अधिक महान् हैं।

यदि कोई विरोधी शक्तिआये तो व्यक्तिको उसके सुझावों का स्वीकार और स्वागत नहीं करना चाहिये, परन्तु शक्ति की ओर मुड़ना चाहिये और उनसे विमुख होने से इनकार करना चाहिये। व्यक्तिखुल सके या न खुल सके, उसे प्रभुपरायण और सत्यनिष्ठ रहना चाहिये। प्रभुपरायणता और सत्यनिष्ठा ऐसे गुण नहीं हैं जिनके लिये व्यक्तिको योग करना पड़े। वे बिलकुल सादी चीजें हैं जिसे सत्य की अभीप्सा करने वाले किसी भी स्त्री पुरुष को संपादित करने में समर्थ होना चाहिये। यह एक ऐसी बात है जिसे प्रत्येक व्यक्ति को भलीभांति समझ लेना चाहिये। चैत्य सचाई ही असुरोंके सामने टिकने की शक्ति प्रदान कर सकती है और संरक्षण को कार्य करने में समर्थ बनाती है।

आक्रमण और वैश्व शक्तियों की क्रिया के सम्बन्ध में-जब प्रगति तेजी से हो रही होती है, और सुनिश्चित होने की दिशा में बढ़ रही होती है तब बहुत सामान्य रूप से यह पाया जाता है कि ये आक्रमण प्रचण्ड हो जाते हैं-विशेष कर यदि उन्हें लगे कि वे आन्तर सत्ता पर सफलता पूर्वक धावा नहीं बोल सकते तो वे बाहरी आक्रमणों से विचलित करने की चेष्टा करते हैं। व्यक्ति को इसे बल की कसौटी के रूप में, प्रकाश और शक्तिके प्रति अपनी स्थिरता और उद्घाटन की सब क्षमताओं को एकत्रित करने के लिये पुकार के रूप में ग्रहण करना होगा जिससे वह अपने को अदिव्यता पर दिव्यता की विजय का और इस जगत् जाल में अन्धकार पर प्रकाश की विजय का उपकरण बना सके। तुम्हें इसी भाव से इन कठिनाइयों का तब तक मुकाबला करना होगा जब तक उच्चतर वस्तुएँ तुममें इतनी दृढ़ न हो जाये कि ये शक्तियाँ उन पर आक्रमण न कर सकें।

उसका यह कहना बिलकुल ठीक है कि उन आक्रमणों की प्रचण्डता का कारण यह तथ्य था कि तुमने साधना को गंभीरता पूर्वक ग्रहण किया था और हम कह सकते हैं कि तुम आलोक के साम्राज्य के द्वारों पर पहुँचने की तैयारी में थे। यह चीज हमेशा ही इन शक्तियों को भड़का देती है और वे शक्तियाँ साधक को साधना से विमुख करने के लिये एड़ी से चोटी तक जोर लगा देती हैं तथा हर किसी मौके का उपयोग करती हैं या उसे उत्पन्न करती हैं अथवा, यदि सम्भव हो, तो अपने सुझावों, अपने उग्र प्रभावों एवं सब प्रकार की ऐसी घटनाओं से जो इस प्रकार को अवस्थाओं के प्रबल होने पर सदा ही अधिकाधिक मात्रा में प्रकट हो जाती हैं, अनुचित लाभ उठाकर साधक को पूरी तरह पथभ्रष्ट करने के लिये पूरा जोर लगाती हैं जिससे वह द्वारों तक न पहुँच पाये।

मैंने तुम्हें अनेक बार इन शक्तियों का निर्देश करते हुए लिखा है, किन्तु मैंने इस बात पर बल नहीं दिया क्योंकि मैंने देखा कि ऐसे अधिकतर व्यक्तियों के समान जिनके मन आधुनिक युरोपीय शिक्षण के द्वारा तार्किक बन गये हैं, तुम्हारे अन्दर भी इस ज्ञान में विश्वास करने की या कम-से-कम इसे कोई महत्व देने की प्रवृत्ति नहीं थी।

संदर्भ-श्री अरविन्द के पत्र भाग-3

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

हृदय मंथन

जिनका साधन केवल प्रभु प्रेम है। उच्चतम ज्ञानात्मक भूमिका में उन्होंने सिर खपाई नहीं की। इस प्रकार ज्ञान-भक्तितथा योग के विभिन्न ग्रन्थों के अपने-अपने क्षेत्र शब्दावली तथा साधन क्रम हैं, अपने स्तर हैं। निम्न स्तर के साधक के साधन तथा मान्यताएँ, उच्च स्तर के साधक से भिन्न होना स्वाभाविक हैं। निम्न साधक के उच्च भूमिका प्राप्त कर लेने पर साधन तथा मान्यताओं के स्वरूप में भी अन्तर आ जाता है। कठिनाई तब आती है जब साधक छलाँग लगा कर सीधे वेदान्त सिद्धान्त की काल्पनिक भूमिका से अपने आप को जोड़ लेता है। वेदान्त ज्ञान यथार्थ होते हुए भी वह कल्पनाओं में उड़ता फिरता है।

" इस भूमिका के पश्चात् अब हम मूल विषय पर आते हैं। वेदान्त चूंकि साधन के निम्न स्तरों में हस्तक्षेप नहीं करता, इसलिए उसने चेतना के निम्नतम स्तर को प्रज्ञान कह कर छोड़ दिया, उसे भी ब्रह्म कहा गया तथा उसका आधार इन्द्रियाँ बताया गया। योग का साधन क्षेत्र निम्न अवस्था से लेकर एक अवस्था विशेष तक है, इसलिए चेतनावस्था की विभिन्न अवस्थाएँ, उसके विभिन्न स्तर तथा विभिन्न स्तरों पर उसी के कार्यों की चीरफाड़ करता है। प्रसुप्त तथा जाग्रत अवस्थाओं का भेद दर्शाकर उनकी गतिशीलता किधर होती है, यह बताता है प्रसुप्त कुण्डलिनी को जगदाभिमुखी जाग्रत कहता है जो बाहर की ओर प्रवाहित हो रही है। प्रवाह का आधार इन्द्रियाँ ही हैं। कुण्डलिनी का आधार, योग चाहे मूलाधार कहता है, परन्तु सामान्य जन उस प्रसुप्त कुण्डलिनी को इन्द्रियों की शक्ति ही कहते हैं। इस का भाव यह है कि जो योग की प्रसुप्त कुण्डलिनी है, वह वेदान्त का प्रज्ञान है। प्रसुप्त कुण्डलिनी का अनुभूत आधार इन्द्रियाँ ही हैं। जाग्रत कुण्डलिनी इन्द्रियों का आधार त्यागने लगती है तथा अन्तर द्वार खोलकर, आत्माभिमुख बढ़ने लगती है। प्रज्ञान के विषय में भी ऐसा प्रयोग तो नहीं होता, किन्तु उसे प्रसुप्त प्रज्ञान तथा जाग्रत प्रज्ञान कह सकते हैं। जाग्रत प्रज्ञान का संकेत "प्राह्यं ब्रह्म" कह कर दिया गया। यह अर्थ हम इसलिए ले सकते हैं क्योंकि आगे के सभी महावाक्य प्रज्ञान की जागृति की अपेक्षा रखते हैं।

"इस प्रकार यदि देखा जाए तो कुण्डलिनी मूलाधार में स्थिर होते हुए भी, उस की प्रसुप्तावस्था की कार्यशीलता का आधार इन्द्रियाँ ही हैं। जाग्रत प्रज्ञान के आधार के विषय में वेदान्त कुछ नहीं कहता, केवल उसकी जागृति का संकेत देकर छोड़ देता है, क्योंकि उसका मुख्य प्रतिपाद्य विषय ब्रह्म है, किन्तु विवाद तब खड़ा होता है जब योगी अपने सामने से वेदान्त का लक्ष्य हटा देते हैं तथा वेदान्ती भी साधन रूप में, योग की उपेक्षा करते हैं और दोनों विचार धाराओं को अध्यात्म विकास के क्रम की कड़ियाँ नहीं मानते हुए, दोनों की तुलना करने लगते हैं।"

प्रश्न-"इसका यही भाव हुआ की प्रज्ञान जाग्रत हो चाहे प्रसुप्त वह प्रत्येक अवस्था में ब्रह्म ही है?

उत्तर-जाग्रत तथा प्रसुप्त, केवल पारिभाषिक शब्द हैं अन्यथा चैतन्य का कोई भी स्तर हो, उसका स्पन्दन तथा गतिशीलता कभी लुप्त नहीं होते। प्रसुप्तावस्था में भी यह जगदाभिमुख कार्यशील रहता है। उसे प्रसुप्त इसलिए कहा जाता है क्योंकि अपने उद्गम आत्मा के प्रति वह सोया होता है। इसी बात की ओर संकेत करते हुए भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है-

या निशा सर्वभूतानां
तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि
सा निशा पश्यतो मुनेः ।।

"जब जगत् में सर्वत्र रात्रि फैली है तब प्रायः सभी प्राणी प्रज्ञान की प्रसुप्तावस्था में स्थित हैं, न अपना कोई ज्ञान है न ही जगत् का यथार्थ ज्ञान। उस समय योगीजन जागते हैं, अर्थात् प्रज्ञान की जाग्रत अवस्था में स्थित होते हैं। जैसे जीव को जगत् का प्रत्यक्ष ज्ञान होता है, ऐसे ही योगी को जाग्रत प्रज्ञान का। जिस नाशवान क्षणभंगुर जगत् में सब प्राणी जागते हैं, अर्थात् प्रज्ञान क्रियाशील रहता है, उसके प्रति तत्त्व को जानने वाले मुनि सोते है अर्थात् उदासीन रहते हैं। प्रज्ञान जगत् से हटकर अन्तर्मुखी प्रवाहित होता है।

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज
'हृदय मंथन' पुस्तक से

गतांक से आगे...

!! मेरे गुरुदेव !!

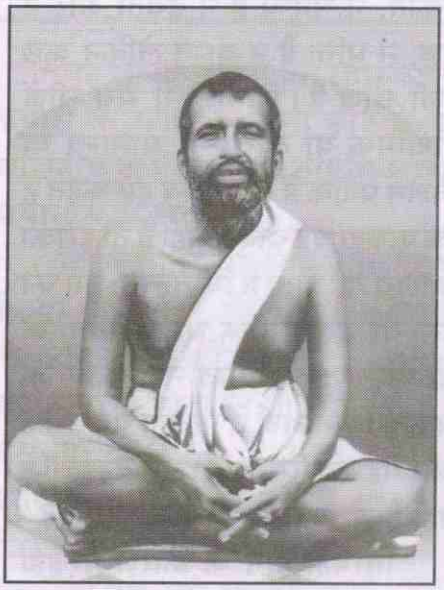

किंतु मेरे गुरुदेव किसी भी चांडाल के यहाँ चले जाते और उससे उसके घर की सफाई करने की आज्ञा माँगते थे। चांडाल का कार्य शहर की सड़कों तथा दूसरे घरों को साफ करना है। वह घर में सामने के दरवाजे से नहीं घुस सकता परंतु पीछे के दरवाजे से आता है और जैसे ही वह चला जाता है वैसे ही जिस जिस जगह पर चला होता है वह सारी जगह गंगाजल से छिड़ककर पवित्र कर ली जाती है। जन्म से ही ब्राह्मण शुद्ध माना जाता है और चांडाल अशुद्ध। किंतु इस ब्राह्मण ने चांडाल के ही घर में दास कर्म करने की आज्ञा माँगी।

वास्तव में चांडाल ने उन्हें वह कार्य करने की आज्ञा नहीं दी क्योंकि वह सब जानते थे कि किसी ब्राह्मण को ऐसा नीच कर्म करने की आज्ञा देना बड़ा भारी पाप होगा जिसके फलस्वरुप यह सब के सब नष्ट हो जाएंगे। अतः चांडाल ने उन्हें वह कार्य नहीं करने दिया परंतु आधी रात को जब चांडाल के घर के सब लोग सोते रहते थे तो श्रीरामकृष्ण घर में से खो जाते थे उनके बड़े बड़े बाल थे और अपने बालों से ही वे सारी जगह जहाँ डोलते और यह कहते जाते थे हे जगन्माता ! मुझे चांडाल का दास बना दो और मुझे यह अनुभव कर लेने दो कि मैं उसे भी हिंदू कहूं। हिंदू धर्म शास्त्रों की शिक्षा है मेरे भक्तों का जो भक्त है, वह मुझे अत्यंत प्रिय है। वह सब मेरे ही बच्चे हैं और उनकी सेवा करना महाभाग्य है।

आत्म शुद्धि के लिए इसी प्रकार की, उनकी अनेक अन्य साधनाएँ थी। उन सबका वर्णन करने में बहुत समय लगेगा। मैं तुम्हारे सम्मुख उनके जीवन की संक्षिप्त रूपरेखा ही प्रस्तुत करूंगा। इसी प्रकार कई वर्षों तक उन्होंने अपने को शिक्षा दी। उनकी साधनाओं में से एक साधना स्त्री-पुरुष के भेदभाव को समूल नष्ट करने देने की थी। आत्मा निर्लिंग है, वह न स्त्री है, न पुरुष। पुरुष का भेद केवल शरीर में ही है; और जो मनुष्य आत्म ज्ञान प्राप्त करना चाहता है वह यह भेदभाव कभी नहीं मान सकता।

यद्यपि हमारे गुरुदेव ने पुरुष शरीर में जन्म लिया था परंतु फिर भी सभी विषयों में स्त्री भाव लाने की चेष्टा करने लगे। वे यह सोचने लगे कि वह पुरुष नहीं बल्कि स्त्री है। अतः स्त्रियों के समान ही कपड़े पहनने लगे, उन्हीं के समान बोलने लगे तथा पुरुषों के सब कार्य छोड़कर सुशील कुटुम्ब की स्त्रियों के बीच में जाकर रहने लगे। इस प्रकार प्रकार की नियमित साधना के बाद उनके मन का स्वरूप पलट गया तथा वह स्त्री पुरुष के भेद की कल्पना बिल्कुल भूल गए और इस प्रकार जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण बिल्कुल बदल गया।

पश्चिम में प्रायः हम स्त्रियों की पूजा की बात सुनते हैं परंतु यह पूजा प्रायः उनके तारुण्य तथा लावण्य के कारण ही होती है। परंतु मेरे गुरुदेव के स्त्री पूजन का भाव यह था कि प्रत्येक स्त्री का मुखारविंद उस आनंदमई मां का ही मुखारविंद है। इसके अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं। मैंने प्रत्यक्ष देखा है कि मेरे गुरुदेव उन स्त्रियों के चरणों पर गिर पड़ते थे जिनको समाज स्पर्श तक नहीं करता और उन स्त्रियों से भी रोते रोते यही पुकारते थे-'हे जगन्माता ! एक रूप में तुम सड़कों पर घूमती हो और दूसरे रूप में तुम जगद्व्यापिनी हो।

हे जगदम्बे, हे माता, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ।' सोचकर देखो, उनका जीवन कितना धन्य है, जिनका काम भाव संपूर्ण रूप से नष्ट हो गया है, जो प्रत्येक रमणी का भक्ति भाव से दर्शन कर रहे हैं तथा जिनके निकट प्रत्येक नारी के मुख ने एक ऐसा रूप धारण कर लिया है जिसमें साक्षात् उसे आनंदमई भगवती जगधात्री का मुख ही प्रतिबिंबित हो रहा है।

हमारी दृष्टि भी इसी प्रकार की ही होनी चाहिए। स्त्री में जो ईश्वर तत्त्व वास करता है, उसे हम कभी ठग नहीं सकते। यह न कभी ठगा गया है, न ठगा जाएगा। यह सदैव अपना प्रभाव जमा लेता है तथा सदैव ही अचूक रूप से बेईमानी तथा ढोंग को पहचान लेता है और सत्य के तेज, आध्यात्मिकता के आलोक तथा पवित्रता की शक्ति का इसे अवश्य ही पता चल जाता है। यदि हम वास्तविक धर्म लाभ करना चाहते हैं तो इस प्रकार की पवित्रता अनिवार्य है।

संदर्भ-विवेकानन्द साहित्य-7

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योग के बारे में

आत्म-प्रतीक शून्य परब्रह्म बन कर तुम कोई ऐसी चीज नहीं बन जाते, जो तुम अब भी नहीं हो, विश्व भी कार्य करना बंद नहीं कर देता। इसका मतलब बस यही है कि भगवान् अभिव्यक्त चेतना के सागरों में से अपनी ही एक धारा या गति 'तत्' को वापस भेजते हैं। जिसमें से समस्त चेतना शुरू हुई थी।

वे सब जो वैश्व चेतना में से बाहर निकलते हैं, आवश्यक रूप से परब्रह्म में नहीं जाते। कुछ अव्याकृत (जिसमें कोई विकार न आया हो) प्रकृति में चले जाते हैं, कुछ अपने-आपको भगवान् में खो देते हैं, कुछ विश्व की अनभिज्ञान की अंधेरी स्थिति (असत् या शून्य) में चले जाते हैं। कुछ विश्व की अनभिज्ञान की प्रकाशमान स्थिति-शुद्ध अविकारी आत्मा या शुद्ध सत् या विश्व की सत्ता के आधार में चले जाते हैं, कुछ अस्थायी निर्गुण आनन्द, चित् और सत् की गहरी नींद (सुषुप्ति) में जाते हैं। ये सभी मुक्ति के रूप हैं।

अहंकार भगवान् से उनकी माया या प्रकृति द्वारा इनमें से किसी की ओर जाने की प्रेरणा पाता है, जिस ओर परम पुरुष उसे भेजना चाहते हों। जिन्हें वे मुक्ति देने के साथ-ही-साथ जगत् में रखना चाहते हैं, उन्हें वे जीवन मुक्त बना देते हैं या फिर से अपनी विभूतियों के रूप में जगत् में भेजते हैं। वे भागवत प्रयोजन के लिये अस्थायी रूप में अविद्या का पर्दा स्वीकार कर लेते हैं। वह पर्दा उन्हें बाँधता नहीं है। वे उसे आसानी से फाड़ या फेंक सकते हैं।

अतः परब्रह्म होने के लिये लालायित होना एक प्रकार का प्रकाशमय भ्रम या माया की सात्विक लीला है। क्योंकि वास्तव में न कोई बद्ध है न मुक्त और न किसी को मुक्त होने की जरूरत है, सब कुछ भगवान् की लीला है, परब्रह्म की अभिव्यक्ति का खेल है। भगवान् कुछ अहंकारों में इस सात्विक माया का उपयोग अपने विशेष प्रयोजन की लीक तक ऊपर उठाने के लिये करते हैं और उन अहंकारों के लिये यही उचित और संभव मार्ग है।

लेकिन हमारे योग का लक्ष्य विश्व में जीवन मुक्ति है, इसलिये नहीं कि हमें मुक्ति की आवश्यकता है या ऐसी कोई और बात है, बल्कि इसलिये कि हमारे अंदर भगवान् की यही इच्छा है। हमें मुक्त होकर जगत् में रहना है, मुक्त होकर जगत् से बाहर नहीं जाना। पूर्ण ज्ञान और आत्म परिपूर्णता के लिये जीवन मुक्त को परब्रह्म की देहली पर खड़ा होना पड़ता है लेकिन देहली पार नहीं करनी होती। वह देहली से जो वक्तव्य लाता है वह है-तत् और हम तत् हैं-लेकिन शब्द यह नहीं बता सकते और मन यह विवेचन नहीं कर सकता कि तत् क्या है या क्या नहीं है?

परब्रह्म निरपेक्ष होने के कारण किसी नाम या निश्चित धारणा द्वारा अनिर्वचनीय है। न वह सत् है न असत्। कोई ऐसी चीज है जिसके सत् और असत् दोनों प्राथमिक प्रतीक है। न वह आत्मा है न अनात्मा या माया, न व्यक्तित्व है न निर्वैयक्तित्व, न गुण है न निर्गुण, न चेतना है न निश्चेतना, न आनंद है न निरानंद, न पुरुष है न प्रकृति, न मनुष्य है न देवता और न पशु, न मुक्ति है न बंधन लेकिन कुछ ऐसी चीज है। जिसकी ये सब चीजें प्राथमिक या व्युत्पन्न, सामान्य या विशेष प्रतीक हैं। फिर जब हम कहते हैं कि परब्रह्म यह या वह नहीं है तो इसका मतलब यह होता है कि तत्वतः तत् को इस या उस प्रतीक या प्रतीकों के योगफल तक सीमित नहीं रखा जा सकता। एक अर्थ में परब्रह्म यह सब है और यह सब परब्रह्म है। और कोई चीज नहीं है जो यह सब हो सके।

निरपेक्ष होने के कारण परब्रह्म तर्क का विषय नहीं है क्योंकि तर्क केवल निश्चित पर लागू होता है। यह घपले की बात होगी यदि हम कहें कि निरपेक्ष निश्चित को अभिव्यक्त नहीं कर सकता इसलिये विश्व मिथ्या या असत् है। निरपेक्ष का स्वभाव ही ऐसा है कि हम यह नहीं जानते कि वह क्या है और क्या नहीं है, वह क्या कर सकता है और क्या नहीं कर सकता। हमारे पास यह मानने का कोई कारण नहीं कि कोई ऐसी चीज भी है जो वह नहीं कर सकता या उसकी निरपेक्षता किसी प्रकार की अक्षमता से सीमित है।

आध्यात्मिक रूप से हम यह अनुभव करते हैं कि जब हम और सब चीजों के परे चले जाते हैं तो हम किसी निरपेक्ष चीज के पास पहुँचते हैं। हम आध्यात्मिक रूप से अनुभव करते हैं कि विश्व मानो निरपेक्ष से निकलती हुई अभिव्यक्ति की प्रकृति है। लेकिन ये सब शब्द और कथन केवल बौद्धिक परिभाषाएँ हैं जो अनिर्वचनीय को व्यक्त करने की कोशिश में हैं। ❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

गतांक से आगे...

योग के आधार

श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा और आत्मसमर्पण

यह संभव नहीं है कि साधक एकाएक व्यक्तिगत प्रयास के ऊपर जोर देना छोड़ दे-और न यह सर्वथा वांछनीय ही है; क्योंकि तामसिक जड़ता से व्यक्तिगत प्रयास कहीं अच्छा है।

व्यक्तिगत प्रयास को उत्तरोत्तर भागवत शक्ति की क्रिया के रूप में रूपांतरित करना होगा। अगर तुम्हें भागवत शक्ति की उपस्थिति का अनुभव होता हो तो तुम उसका अपने अंदर अधिकाधिक आह्वान करो, जिससे वह तुम्हारे प्रयास को नियंत्रित करे, उसे अपने हाथ में ले ले, उसे एक ऐसी चीज में रूपांतरित कर दे जो तुम्हारी न हो, बल्कि शक्ति की हो। इस तरह व्यक्तिगत आधार में कार्य करनेवाली शक्तियाँ भागवत शक्ति के हाथ में चली जायेंगी - अवश्य ही उनका इस प्रकार चला जाना हठात् नहीं, बल्कि धीरे-धीरे पूरा होगा।

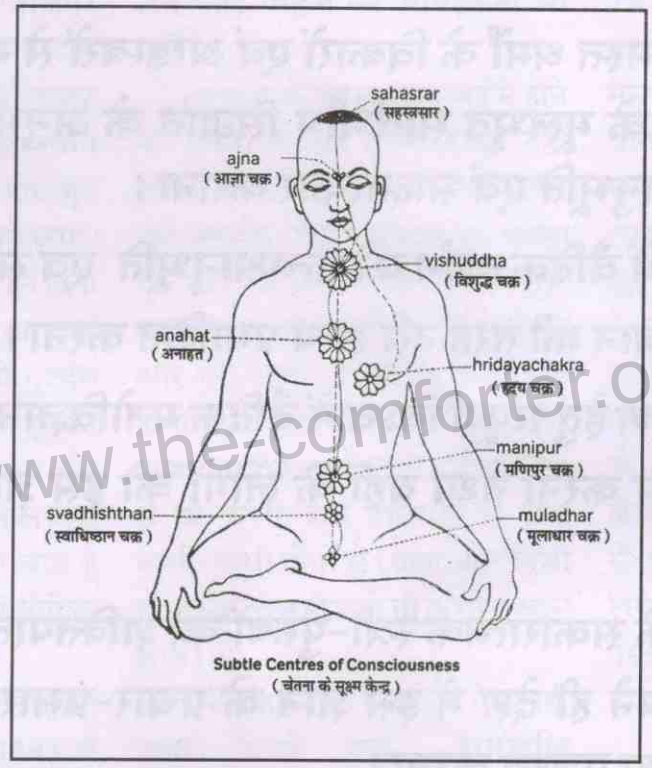

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

परंतु अंतःपुरुष की स्थिति को प्राप्त करना आवश्यक है; उस विवेक का विकास अवश्य होना चाहिये, जो यह ठीक-ठीक देख सके कि भागवत शक्ति क्या है? और निम्नतर विश्व शक्तियों से आकर, क्या-क्या चीजें इन दोनों के साथ मिल गयी हैं? और जब तक भागवत शक्ति के हाथ में आधार की सारी शक्तियाँ नहीं चली जातीं - जिसमें बराबर ही कुछ समय लग जाता है-तब तक सर्वदा ही व्यक्तिगत प्रयास जारी रहना चाहिये, सत्य-शक्ति को निरंतर स्वीकृति देते रहना चाहिये और प्रत्येक निम्नतर मिश्रण का निरंतर त्याग करते रहना चाहिये।

अभी तुम्हें व्यक्तिगत प्रयास छोड़ देने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि इस बात की आवश्यकता है कि तुम अपने अंदर अधिकाधिक भागवत शक्ति का आह्वान करो और उसी के द्वारा अपने व्यक्तिगत प्रयास को नियंत्रित और परिचालित करो।

साधना की प्रारंभिक अवस्थाओं में सब कुछ भगवान् के ऊपर छोड़ देना अथवा अपने व्यक्तिगत प्रयास की आवश्यकता न समझ सब कुछ भगवान् से ही आशा करना युक्तिसंगत नहीं। ऐसा करना तभी संभव होता है जब हृत्पुरुष सामने हो और समस्त क्रिया के ऊपर अपना प्रभाव डालता हो (और तब भी सतर्क रहने और निरंतर अनुमति देते रहने की आवश्यकता होती है), अथवा आगे चलकर, योग की अंतिम अवस्थाओं में ऐसा करना संभव होता है जबकि साक्षात् रूप में या लगभग साक्षात् अतिमानस-शक्ति साधक की चेतना को अपने हाथ में ले लेती है; परंतु यह अवस्था अभी बहुत दूर है। इनके अतिरिक्त अन्य सभी अवस्थाओं में ऐसा मनोभाव रखने से प्रायः साधक निश्चलता और जड़ता को प्राप्त होता है।

सत्ता के जो भाग बहुत कुछ यंत्रवत् कार्य करते हैं, वे ही वास्तव में ऐसा कह सकते हैं कि हम निरुपाय हैं, विशेषतः शरीर (स्थूल भौतिक) चेतना स्वभावतः ही जड़ है और वह या तो मन और प्राण की शक्तियों द्वारा या उच्चतर शक्तियों द्वारा परिचालित होती है। परंतु सभी साधकों में सर्वदा ही इतनी सामर्थ्य रहती है कि वे अपने मन के संकल्प और प्राण के प्रवेग को भगवान् की सेवा में नियुक्त करें।

www.the-comforter.org

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर

उद्देश्य

◆ समस्त विश्व के मानवों के कल्याण हेतु बिना किसी वर्ग, वर्ण, जाति, धर्म, राष्ट्रीयता एवं लिंग भेद के इस दिव्य अध्यात्म ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करना एवं समस्त विश्व में अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र स्थापित करना।

◆ विश्व के समस्त धर्मों के विकारों एवं आडम्बरों से मानव मात्र को मुक्त करना एवं अध्यात्म के मूलभूत सार्वभौम सिद्धांत के अनुसार मन मंदिर में उस परमतत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।

◆ विश्व भर में वैदिक दर्शन की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार करवाकर भौतिक जगत् में विज्ञान की तरह उसे सत्य प्रमाणित करना।

◆ विश्व कल्याण हेतु संपूर्ण विश्व में वैदिक मनोविज्ञान(अध्यात्म विज्ञान) की शिक्षा हेतु प्रबन्ध करना तथा वहीं के लोगों को इस ज्ञान का प्रशिक्षण देने योग्य बनाना।

◆ विश्व के सकारात्मक स्त्री-पुरुषों को शक्तिपात-दीक्षा देकर चेतन करना तथा उन्हें अपने ही देश में इस ज्ञान के प्रचार-प्रसार का अधिकार देकर मानव शान्ति का पथ प्रशस्त करना।

◆ सिद्धयोग में वर्णित शक्तिपात दीक्षा द्वारा मानवीय गुणों में परिवर्तन लाया जाकर तमोगुण से रजोगुण, रजोगुण से सतोगुण, सतोगुण से त्रिगुणातीत जाति में बदलकर उस परम तत्त्व की प्रत्यक्षानुभूति एवं साक्षात्कार कराना।

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

www.the-comforter.org

आदर्श स्टेडियम बाड़मेर में राजस्थान पत्रिका द्वारा आयोजित हमराह कार्यक्रम में सिद्धयोग प्रदर्शनी, बाड़मेर आश्रम व चौहटन तहसील के ध्यान योग केन्द्र में ध्यान मग्न साधक तथा चौहटन तहसील के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (18 से 20 अक्टूबर 2018)

दुर्लभ जी अस्पताल जयपुर के कैंसर वार्ड में मरीजों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देकर ध्यान कराया गया। (17 अक्टूबर 2018)

भरतपुर मेले में सिद्धयोग प्रदर्शनी का आयोजन। (19 से 25 अक्टूबर 2018) हजारों लोगों को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी दी गई तथा सैकड़ों लोगों ने किया ध्यान।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा डीडवाना (नागौर) में 11 अक्टूबर को सद्गुरुदेव सियाग की मूर्ति का अनावरण और विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (2 से 9 अक्टूबर 2018)

गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर) के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (22 से 29 सितम्बर 2018)

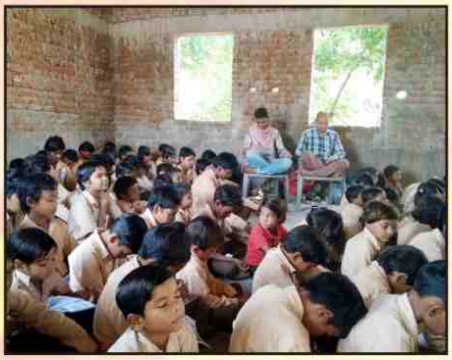

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा गंगापुर सिटी द्वारा सिद्धयोग शिवर का आयोजन। (30 सितम्बर 2018)

www.the-comm

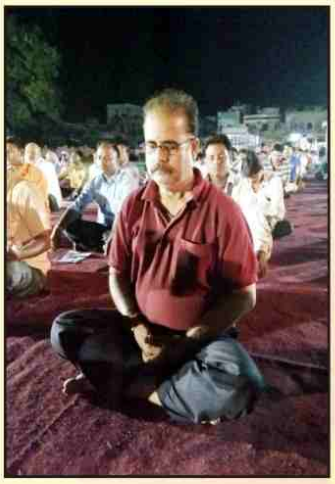

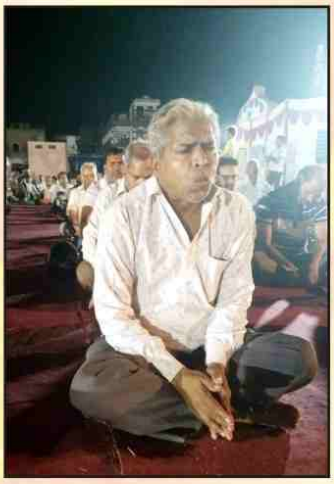

फिस्टूला से मुक्ति

आध्यात्मिक जीवन के अंतरंग क्षण

2 फरवरी 1995 को पहली बार मैं ''अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर आश्रम'' गया और वहाँ मौजूद गुरुभाईयों के आग्रह पर वहीं ध्यान लगाया। वहाँ मुझे यौगिक क्रियाएँ शुरु हो गई और मेरा सारा शरीर घूमने लगा। जबकि मुझे यह मालूम था कि उन दिनों गुरुदेव मुम्बई में हैं। मुझे बेहद आश्चर्य हुआ कि मैंने अब तक ना तो गुरुदेव को देखा है, ना ही उनसे मिला हूँ फिर यह सब कैसे हुआ? मेरी जिज्ञासा और बढ़ने लगी। मैंने निरन्तर ध्यान लगाना शुरू किया और आश्चर्य की बात है कि दीक्षा लिये बगैर मुझे सारी यौगिक क्रियाएँ हुई।

यहाँ मैं इस बात का जिक्र करना उचित समझता हूँ कि मुझे 1991 के शुरू से ही फिस्टुला(Fistula) की तकलीफ थी। मैंने एक बार एक प्राइवेट डॉक्टर से ऑपरेशन भी करवाया था, मगर कुछ ही समय बाद पुनः तकलीफ हो गई थी। जून 1992 से मैंने एक काबिल होम्यौपैथिक डॉक्टर से अपना इलाज शुरू किया था जो कि दीक्षा लेने के पूर्व तक चल रहा था। इस लम्बे समय में मैंने ''मिर्ची'' का प्रयोग बिल्कूल बन्द कर दिया था।

इस छोटी सी उम्र में ऐसी बीमारी को लेकर मैं परेशान था। मेरी शुरू से ही यह धारणा रही है कि सही दीक्षा मनुष्य को शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से पूर्ण बनाती है। अतः मैंने 2 फरवरी 1995 से स्वतः ही सारी दवाईयाँ बन्द कर दी और आज तक मुझे कोई तकलीफ नहीं है और अब कोई परहेज की आवश्कता भी नहीं है।

गुरुदेव के उस समय मुम्बई में होने की वजह से मुझे तुरन्त दीक्षा नहीं मिली। मगर मैंने दृढ़ निश्चय से और पूर्ण समर्पण भाव से गुरुदेव को अपना गुरु मान के ध्यान शुरू किया। मुझे शुरुआत में कुछ यौगिक क्रियाएँ हुई और मेरी लम्बी बीमारी मात्र 15-20 दिनों में ठीक हो गई। इसके बाद मुझे प्राणायाम होने लगा, कभी दांई नासिका से तो कभी बांई नासिका से और कभी-कभी दोनों से। प्राणायाम कभी तो एकदम तेज हो जाते तो कभी एकदम शांत।

मैं चाहकर भी सब कुछ रोक नहीं पाता। उसके बाद **पातंजलि योगदर्शन** में वर्णित बन्ध, जैसे- **मूलाधार बंध, उड्डियान बंध और जालन्धर बंध** लगने लगे। तेज श्वास के साथ पूरा सीना भरने लगा और फिर स्वतः ही छूट जाती। जितनी देर श्वास रुकती, मुझे तेज प्रकाश पुँज दिखने लगा। जैसा कि शास्त्रों में वर्णित है तेज प्राणायाम से श्वास ''सुषुमना'' में बहती है और ध्यान लगता है। बहुत जल्दी ही यह सब क्रियाएँ होने लगी जबकि अब तक मैंने दीक्षा भी नहीं ली थी। जिससे मेरी जिज्ञासा और बढ़ी और मैं गुरुदेव से मिलने को व्याकुल हो उठा।

इन्हीं दिनों गुरुदेव होली के अवसर पर अपने गाँव जाने के लिये मुम्बई से जोधपुर आये और यहाँ कुछ घण्टों के लिये रुके। **मुझे पहली बार 15 मार्च, 1995 को गुरुदेव से साक्षात् मिलने का अवसर मिला,** मगर समय के अभाव से ज्यादा वार्तालाप नहीं हुआ और सिर्फ चरण स्पर्श का मौका मिला। उस दिन चरण स्पर्श करते समय, मुझे जो अनुभूति हुई, उसका वर्णन शब्दों में करना कठिन है। मुझे लगा कि **''मैं शरीर से बाहर आ गया हूँ''** और अपने आप को एकदम हल्का महसूस किया। कुछ क्षण के लिये मैं जैसे अपने होश ही खो बैठा। गुरुदेव ने तुरन्त ही अपने स्पर्श से मुझे चेतन किया और मुस्कराने लगे। मेरे पूछने पर बताया कि 16 मार्च 1995 को अनुपगढ़ (श्रीगंगानगर) में दीक्षा का कार्यक्रम है।

घर में लम्बे विचार विमर्श के बाद मैं अपने एक अंतरंग मित्र को लेकर ''अनुपगढ़'' गया और वहीं हमने दीक्षा ली। दीक्षा लेने के बाद वहीं ध्यान लगाया तो मुझे महसूस हुआ कि **''अब तक मैं अधुरा था और आज मेरा पुनः जन्म (द्विज)हुआ है।''** वहीं पर मुझे तेज गति से **प्राणायाम** होने लगा।

मैंने नियमित ध्यान शुरू किया और आज तक मेरी एकाग्रचितता बढ़ती जा रही है। दीक्षा के कुछ ही दिनों बाद अजपा जाप शुरू हो गया और अब मेरे अन्दर हर पल हलचल रहती है।

www.the-comforter.org

दीक्षा के बाद एकदम से **''कुम्भक''** लगने लगा और पेट अन्दर की ओर जाता महसूस हुआ। मूलाधार से सारा शरीर ऊपर की ओर उठने लगा। मेरे अन्दर से ''कफ'' निकलने लगा। यह सत्य है कि **''बात-पित-कफ''** के असन्तुलन से ही शरीर की ज्यादातर बीमारियाँ होती हैं। मुझे लगा कि मेरे अन्दर से कोई इनकी अनावश्यक मात्रा को निकाल कर, बाहर कर रहा है। इसके बाद मेरी दोनों आँखें पूर्ण रूप से बंद हो जाती हैं और आँखे बंद करते ही **''प्रकाश ही प्रकाश''** नज़र आता है। कभी सफेद प्रकाश तो कभी **गहरे नीले रंग का प्रकाश दिखाता है।** अब मुझे महसूस होता है कि मेरा पेट रीढ़ की हड्डी से चिपक जायेगा और अपने रीढ़ से एक आग का गोला ऊपर की ओर उठता हुआ महसूस होता है साथ ही सारे शरीर से गर्मी निकलती है।

सही मायने में तो दीक्षा वो है, जो मनुष्य की सम्पूर्ण क्रियाएँ ही बदल दे, उसके सोचने का तरीका ही बदल दें। शास्त्रों में वर्णित राजयोग-यम, नियम, आसन, प्रत्याहार, प्राणायाम, धारणा, ध्यान और समाधि के अनुसार सिर्फ सुपात्र को ही दीक्षा मिलनी चाहिये। आज गुरुदेव पात्र की पात्रता देखे बगेर ही दीक्षा देते हैं और **पात्र अपने-आप सुपात्र बन जाता है।** राजयोग के अनुसार मनुष्य को माँसाहारी भोजन नहीं करना चाहिये जबकि मैं बचपन से ही माँसाहारी भोजन करता आ रहा था और इस प्रकार मैंने दीक्षा ली और आज मेरा माँसाहारी भोजन छूट गया।

-संजय के माथुर
शास्त्री नगर जोधपुर (राज.)
संदर्भ-सवितादेव संदेश,
सन् 1995 से

सद्गुरुदेव की कृपा से आनंदमय जीवन

मैं मौसम पत्नी मनीष तोमर उम्र 29 वर्ष निवासी संजय कॉलोनी मुरैना (म.प्र.) सर्वप्रथम सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग व दादा गुरुदेव श्री गंगाईनाथ जी महायोगी के चरण कमलों की बार-बार वन्दना एवं प्रणाम करती हूँ।

मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं कि मैं उन शब्दों में सद्गुरुदेव की महिमा कर सकूं। सद्गुरुदेव भगवान् ने जीवन रूपी नैया की डोर अपने हाथ ले रखी है।

जिन्होंने मुझे ऐसी निष्ठा व लगन दी है, इसी से मैं इस मंजिल पर पहुँची हूँ। सर्व प्रथम गुरुदेव के चरणों में मेरा ध्यान लगातार चलता रहा। जब मेरे पिताजी ध्रुवसिंह सिकरवार कोटा के पास पलायथा हॉस्पिटल में कम्पाउडर थे, जहाँ गुरुदेव के एक साधक भी पदस्थ थे, उनके द्वारा सद्गुरुदेव की जानकारी मेरे पिताजी को मिली। उनके साथ मेरे पिताजी को दीक्षा मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसके पश्चात् पिताजी ने हम सबको गुरुदेव के कार्यक्रम जैसे-कभी कोटा, कभी बीकानेर, कभी जोधपुर तो कभी जयपुर में परिवार के, हम सब लोग और अन्य लोग भी जोड़ते रहे व कार्यक्रम में शामिल हुए। हमारी योग साधना चलती रही।

गुरुकृपा से हमारी शिक्षा पोस्ट ग्रेजुएट हो गई, उसमें मेरे 86 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए। उसी तारतम्य में वगेर सिफारिस के, बिना पैसा खर्च किए 2013 में मेरी नौकरी लैब असिस्टेन्ट के पद पर धौलपुर के पास पंचगाँव राजस्थान में पोस्टिंग हो गई। नौकरी पढ़ाई के अतिरिक्त हमने अपनी साधना को अपनाये रखा। गुरुकृपा से 2016 में शादी हो गई, घर-वर सब सुयोग्य मिला। मेरा पति भी वी.एम.एस. आयुर्वेदिक डॉक्टर है। ससुर छत्तीसगढ़ में उद्योग अधिकारी हैं। छोटा सीमित परिवार होकर हर प्रकार की सम्पन्नता है। यह सब मेरे गुरुदेव की कृपा से ही सम्भव हुआ है। **मंत्र जप और ध्यान से जीवन मंगलमय हो गया।**

मैं सभी बच्चों-बूढ़ों व युवा विद्यार्थियों से अपील करती हूँ कि गुरुदेव की दिव्य वाणी में मंत्र सुनकर उनकी तस्वीर से ध्यान कर अपना सौभाग्य प्राप्त करें। उनके द्वारा दिये गए मंत्र जप व ध्यान से अपना जीवन संवारें। ऐसा मौका फिर जीवन में कभी नहीं आएगा।

मेरे जीवन में जैसा प्रकाश आया है, वह आप सबको भी मिले। गुरुदेव के चरण कमलों में बारंबार वन्दना।

मौसम तोमर
पत्नी श्री मनीष तोमर
संजय कॉलोनी, मुरैना (म. प्र.)

www.the-comforter.org

साधक के अंतरंग क्षण

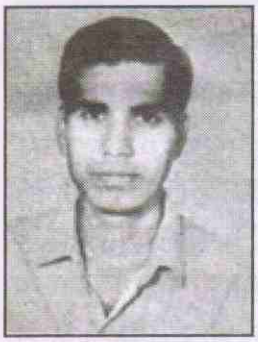

21 जुलाई 1995 की संध्या मेरे लिए बहुत विचित्र मंगलमयी सिद्ध हुई थी। इस दिन मुझे गुरुदेव जी से दीक्षा लेने का शुभ अवसर मिला था। उसी शाम मुझे ध्यान लगा और यौगिक क्रियाएँ स्वतः होने लगी। मैं शुरू से ही विज्ञान का विद्यार्थी होने के नाते अपने आप पर से विश्वास उठ गया। मैं भयभीत एवं परेशान हो गया। गुरुमंत्र का उपयोग न करने का निश्चय किया किन्तु परिणाम बिल्कुल विपरीत था। ध्यान केवल स्मरण करने पर लगने लगा। जब मैंने पूर्ण समर्पण किया तो फिर सब कुछ ठीक तरह से चलता रहा।

मुझे ध्यान के दौरान आनन्द की अनुभूति होती है और आम क्रिया-कलाप में कोई कष्ट नहीं होता बल्कि कभी-कभी ऐसा लगता है, जो कार्य मेरे लिये मुश्किल हो सकता था, सहज में ही हो जाता। यह मेरे लिये एक शोध व कोतूहल का विषय बन चुका है। दीक्षा के पश्चात जो कुछ हुआ, उन घटनाओं का संक्षेप में विवरण देना चाहता हूँ।

मेरा स्वभाव शुरू से ही डरपोक और शर्मिला था, किन्तु अब अपने आप को आत्मविश्वास से पूर्ण महसूस करने लगा हूँ। एक रात घर में सर्प दिखाई दिया, उस समय पर मैंने अपनी बहादुरी का परिचय देते हुए सर्प को एक साधारण लकड़ी के टुकड़े से मार दिया और अग्नि को समर्पित किया। इसका परिणाम अगले दिन सुबह ध्यान के दौरान तक पश्चाताप के साथ मिला। मेरा शरीर बुरी तरह से काँपने लगा और हाथ जोड़कर मानो मैं क्षमा माँग रहा हूँ।

एक रात मुझे ध्यानवस्था में बृहस्पति ग्रह पर हो रही एक क्रांति का दृश्य अनुभव हुआ। एक धरातल पर सारे पिण्डों के टकराने और फिर से उछलकर कुछ दूरी पर गिरने जैसा प्रतीत हुआ। मुझे कुछ शक हुआ कि कहीं यह मेरा भ्रम तो नहीं तो मैंने आँखें खोलकर बाहरी वातावरण को ठीक से निरखा। फिर आँखें बंद होते ही मानो फिल्म फिर से शुरू हो गई। यह दृश्य लगभग एक मिनट का था।

ध्यान के दौरान ही एक स्वर्ण धातु से निर्मित विशालकाय मछली की मूर्ति दिखाई दी जिसका अग्र भाग किसी कबाड़े में दबा दिखाई दिया और यह धरातल पर लगभग 45 डिग्री अंश का कोण बनाती हुई स्थिर अवस्था में दिखाई दी। इसके पीछे कुछ मानवाकृतियाँ दिखाई दी। जिसमें कुछ लोग स्थिर तो कुछ चलते फिरते नज़र आ रहे थे। सब लोग निश्चिंत और उस मूर्ति से बेखबर प्रतीत होते थे। उन्होंने शरीर पर ढ़ीले-ढ़ाले वस्त्र धारण किये हुए थे। मानो किसी रोमन सभ्यता का परिचायक हो। संध्या का समय जान पड़ता था। किसी भी मानव को पहचाना जाना मुश्किल था। कुछ समय बाद अजीबो गरीब विशालकाय पक्षियों को देखा। जिनकी आकृति कुछ उल्लू व चील से मिलती-जुलती थी। कुछ समय बाद अदृश्य हो गये।

विज्ञान मेरा रूचिकर विषय है। अतः बरमुण्डा त्रिकोण और उड़न तस्तरियों जैसी शक्तियों को जानने की शुरू से ही जिज्ञासा है। क्योंकि ये दोनों अब तक रहस्य के रूप में सम्पूर्ण मानव जाति के विज्ञान को चुनौती देते हैं। गुरुजी की कृपा रहते यदि मुझे इन अनसुलझे रहस्यों को उजागर करने का अवसर मिला तो मैं अवश्य ही प्रयत्न करूंगा।

मेरी माताजी के पैरों का तेज दर्द एक दिन में गायब हो गया। पैर दबाते-दबाते मंत्र जाप किया जिससे ध्यान में जुड़ गया और विभिन्न प्रकार से प्रहार व दबाव तथा हवा में विभिन्न प्रकार से हाथों की मुद्राएँ धारण करते हुए, लगभग एक घंटे तक ध्यानावस्था में रहा तथा अगले दिन से दर्द कम होता गया। योग के दौरान कभी-कभी मेरा मस्तक पैर को स्पर्श करते हुए मानो किन्हीं नाड़ियों की जाँच कर रहा था। मुझे ठीक तरह से याद नहीं लेकिन मुझे ऐसा आभास हुआ कि रुधिर वाहिनियाँ अन्दर कहीं प्रवाह में रुकावट पैदा कर रही थी। मुझे बहुत से आश्चर्य होते हैं। कभी-कभी तो बिल्कुल भी विश्वास नहीं होता है किन्तु जो मेरे साथ घटित हुआ है, उसे झुठला भी तो नहीं सकता।

-जयराज राव
इलेक्ट्रोनिक्स सर्विस इंजिनियर
जोधपुर

संदर्भ-सवितादेव संदेश
सन् 1995 से

www.the-comforter.org

सिद्धयोग शिविरों के दौरान होने वाले अनुभव

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर की समदड़ी-सांचौर टीम द्वारा 5 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक राजस्थान के जालोर जिले के सांचौर, रानीवाड़ा एवं चितलवाना तहसीलों, बाड़मेर के गुड़ामालानी तहसील एवं गुजरात के बनासकांठा जिले के थराद, धानेरा एवं लाखनी तहसीलों के विभिन्न विद्यालयों, कॉलेजों एवं छात्रावासों में कुल 127 ध्यान कार्यक्रम करवाए गए। जिसमें 50 हजार से अधिक विद्यार्थियों को मंत्र दीक्षा देकर ध्यान करवाया गया।

ध्यान के दौरान हुए अनुभवः-

1. राजस्थान राज्य में

(1) जालोर जिले के सांचौर तहसील के भादरूणा गाँव के आदर्श उ. मा. विद्यालय में एक छात्रा को बहुत ही गहरा ध्यान लगा। करीब आधा घण्टे से भी ज्यादा समय तक समाधि अवस्था रही फिर ध्यान खुलवाने के लिए आज्ञाचक्र पर दबाना पड़ा। उसके बाद वह धीरे-धीरे सामान्य अवस्था में आई।

(2) जालोर जिले के सांचौर तहसील के सरनाऊ गाँव के रा. उ. मा. विद्यालय में कुछ छात्र-छात्राओं को स्वतः यौगिक क्रियाएँ हुई।

(3) जालोर जिले के सांचौर तहसील के गुन्दाऊ गाँव के रा. उ. मा. विद्यालय में दो शिक्षकों को ध्यान के दौरान शरीर हलका होकर उड़ने जैसा अनुभव हुआ।

(4) जालोर जिले के सांचौर तहसील के पलादर गाँव के रा.उ.मा. विद्यालय में एक छात्र को ध्यान के दौरान खिंचाव एवं करंट के झटके महसूस हए।

(5) बाड़मेर जिले के गुड़ामालानी तहसील के आलपुरा गाँव के रा.उ.मा.विद्यालय में काफी छात्र-छात्राओं को ध्यान के दौरान यौगिक क्रियाएँ हुई।

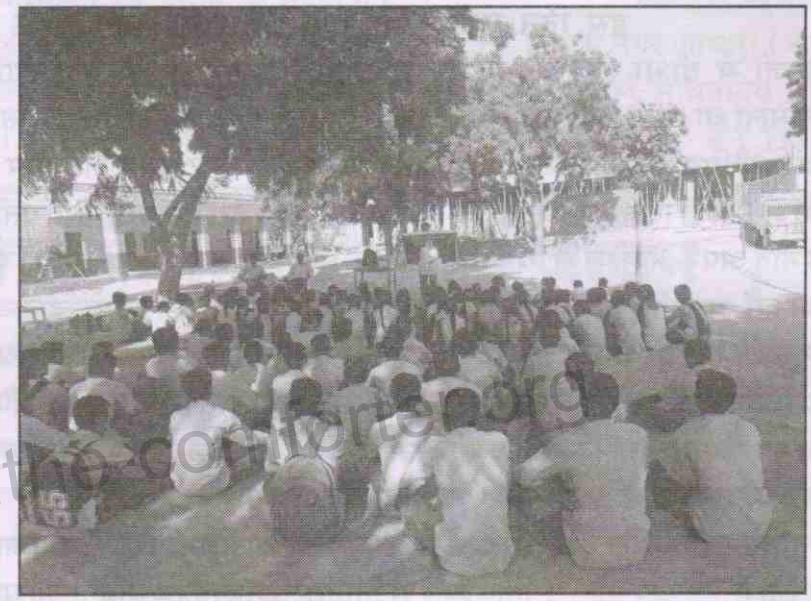

2. गुजरात राज्य में

(1) बनास कांठा जिले धनेरा तहसील के भाटिब गाँव के रा.उ.मा. विद्यालय में एक शिक्षिका को ध्यान के दौरान श्रीकृष्ण भगवान एवं प्रकाश पुँज के दार्शन हुए।

(2) बनास कांठा जिले के थराद तहसील के थराद शहर के राजेश्वर उ.मा.विद्यालय में शिक्षिका को खड़े-खड़े ध्यान लग गया। उसने बताया कि '' पिछले 10 वर्षों से वह गायत्री आराधना कर रही थी, लेकिन ऐसा अनुभव कभी नहीं हुआ।

(3) बनासकांठा जिले के धानेरा तहसील के कुंवारला गाँव के कस्तुबा गांधी आवासीय विद्यालय के छात्राओं को ध्यान के दौरान अलग अलग तरह की यौगिक क्रियाएँ हुई। ऐसा अद्भुत अनुभव और वो भी एक तस्वीर से होना आश्चर्य और प्रथम दृष्ट्या अनुभव था।

जितने विद्यालयों में हमने कार्यक्रम करवाए वहाँ सबके अपने अपने अलग अनुभव थे। हर किसी को आश्चर्य होता था कि एक तस्वीर से ऐसा योग अपने आप कैसे हो जाता है?

-लुम्बेश गहलोत
समदड़ी, जिला-बाड़मेर

www.the-comforter.org

मनुष्य और विकास

मनुष्य के उत्तरोत्तर विकास के संबंध में श्री अरविन्द ने 'दिव्य जीवन' पुस्तक में विषद वर्णन किया है।

लेकिन अगर कोई श्रेष्ठतर सृष्टि अभिप्रेत है तो निश्चय ही वह नयी श्रेणी, प्ररूप या प्रतिमान मनुष्य में से विकसित न होगी; क्योंकि, उस हालत में मानव सत्ताओं की कोई जाति या प्रकार या प्ररूप ऐसा होगा जिसमें पहले से ही **'अतिमानव'** का उपादान हो, जैसे जो अनोखी पशु-सत्ता मानव जाति में विकसित हुई, उसमें पहले से ही मानव स्वभाव के तत्त्व संभाव्य या उपस्थित थे; ऐसी कोई जाति, प्रकार या प्ररूप नहीं है, अधिक-से-अधिक अध्यात्मभावापन्न मानसिक सत्ताएँ हैं जो **पार्थिव सृष्टि** से बच निकलने की टोह में है। यदि प्रकृति के किसी गुह्य विधान द्वारा ऐसी अतिमानसिक सत्ता का मानव-विकास अभिप्रेत है तो यह मानव-जाति में से कुछ के द्वारा ही हो सकता है, जो अपने-आपको जाति से अलग कर लें ताकि सत्ता के इस नये प्रतिमान की पहली नींव बन सके। यह मानने के लिये कोई कारण नहीं है कि समस्त जाति इस पूर्णता को विकसित कर सकती है। यह मानव जीव में व्यापक संभावना नहीं हो सकती।

अगर वस्तुतः मनुष्य प्रकृति में पशु से विकसित हुआ है फिर भी, अब हम ऐसा कोई दूसरा पशु-प्ररूप नहीं देखते जो अपने से परे के विकास के लक्षण दिखाता हो। यदि पशु-जगत् में ऐसा कोई विकासात्मक दबाव था भी तो जैसे ही मनुष्य के प्रकट होने के साथ उसकी परिपूर्त्ति हुई, वह फिर से शांति में जा डूबा होगा। अतः अगर विकास का अगला चरण अपने अतिक्रमण के लिये ऐसा दबाव है तो वह भी उसके उद्देश्य की परिपूर्त्ति के साथ, अतिमानसिक सत्ता के प्रकट होने के साथ ही शांति में धंस जायेगा। लेकिन वस्तुतः ऐसा कोई दबाव है नहीं। शायद मानव प्रगति का विचार अपने-आप में भ्रम है। क्योंकि इसका कोई चिह्न नहीं है कि जो मनुष्य एक बार पशु-स्थिति से उभरा था उसने अपनी जाति के इतिहास में मौलिक प्रगति कर ली है, उसने अधिक-से-अधिक भौतिक जगत् के ज्ञान, भौतिक विज्ञान, अपने इर्द-गिर्द की चीजों के साथ व्यवहार में, प्रकृति के गुप्त विधानों के शुद्ध रूप से बाह्य या व्यावहारिक उपयोग में प्रगति की है,अन्यथा वह अब भी वही है जो हमेशा से, संस्कृति के आरंभ से रहा है। वह उन्हीं क्षमताओं को अभिव्यक्त करने में लगा रहता है, वही गुण और वही त्रुटियाँ, वही प्रयास, बड़ी-बड़ी भूलें, उपलब्धियाँ और कुण्ठाएँ। अगर प्रगति हुई भी है तो एक चक्कर में अधिक-से-अधिक शायद चक्र को विस्तृत करने में।

आज मनुष्य प्राचीन मनीषियों, द्रष्टाओं और विचारकों से अधिक बुद्धिमान नहीं है, अतीत के महान् अभीप्सुओं, प्रथम महान् रहस्यवादियों से अधिक आध्यात्मिक नहीं है, कला और कौशल में वह प्राचीन कलाकारों और कारीगरों से भी श्रेष्ठ नहीं हैं। जो प्राचीन जातियाँ लुप्त हो गयी हैं, उन्होंने उतनी ही सशक्त और तात्त्विक मौलिकता, अन्वेषण, जीवन के साथ व्यवहार करने की योग्यता प्रदर्शित की थी। अगर आधुनिक मनुष्य इस दिशा में कुछ आगे गया है, किसी तात्त्विक प्रगति द्वारा नहीं बल्कि कोटि, क्षेत्र, प्रचुरता में तो इसलिये कि उसे अपने पूर्वजों की उपलब्धियाँ विरासत में मिली थीं। इस विचार का कोई आधार नहीं मिलता कि वह अर्द्ध-ज्ञान और अर्द्ध-अज्ञान से, जो उसकी जाति की छाप है, कभी रास्ता काटकर निकाल सकेगा या अगर वह उच्चतर ज्ञान विकसित करें भी तो वह मानसिक चक्र की चरम सीमा को तोड़कर बाहर निकल सकेगा।

पुनर्जन्म को आध्यात्मिक विकास का समर्थ साधन और उसे संभव बनानेवाला तत्त्व मानने का लोभ होता और यह तर्क-विरुद्ध भी नहीं है, फिर भी यदि पुनर्जन्म को एक तथ्य मान भी लिया जाये तो भी यह निश्चित नहीं है कि यही उसकी सार्थकता है। पुनर्जन्म के बारे में सभी पुरानी परिकल्पनाएँ उसे पशु से मनुष्य में और साथ ही मनुष्य से पशु-शरीर में अंतरात्मा का सतत **देहान्तरण** मानती थी। भारतीय विचार ने उसमें कर्म की, किये गये शुभ या अशुभ के बदले की व्याख्या, विगत इच्छा और प्रयास के फल को भी जोड़ दिया; लेकिन इसमें एक प्ररूप से दूसरे उच्चतर प्ररूप तक उत्तरोत्तर विकास का संकेत न था, उससे भी कम न था इस प्रकार की सत्ता के जन्म का संकेत जिसका कभी अस्तित्व ही नहीं रहा लेकिन जिसे फिर भी भविष्य में विकसित होना है।

संदर्भ-श्री अरविन्द 'दिव्य जीवन' पुस्तक पृष्ठ-820

www.the-comforter.org

श्रीकृष्ण का आदेश

अलीपुर जेल में योगयुक्तावस्था में श्री अरविन्द को भगवान् 'श्रीकृष्ण'' द्वारा दिए गए दो आदेश

अलीपुर जेल से छूटने के बाद श्रीअरविन्द का पहला महत्त्वपूर्ण भाषण उतरपाड़ा नामक स्थान पर हुआ था। इसमें उन्होंने अपने जेल-जीवन का आध्यात्मिक अनुभव सुनाया और साथ ही देश को सच्ची राष्ट्रीयता का संदेश दिया। उनको जेल में भगवान् श्री कृष्ण ने दो आदेश दिए जो इस प्रकार हैं-

मैंने योगसिद्धि पाने के लिये बहुत दिनों तक प्रयास किया और अंत में किसी हद तक मुझे मिली भी, पर जिस बात के लिये मेरी बहुत अधिक इच्छा थी उसके संबंध में मुझे संतोष नहीं हुआ। तब उस जेल के, उस कालकोठरी के एकांतवास में, मैंने उसके लिये फिर से प्रार्थना की। मैंने कहा, ''मुझे अपना आदेश दो, मैं नहीं जानता कि कौन-सा काम करूं और कौनसा नहीं? मुझे एक संदेश दो।''

इस योगयुक्तावस्था में मुझे दो संदेश मिले। पहला यह था, ''मैंने तुम्हें एक काम सौंपा है और वह है इस जाति के उत्थान में सहायता देना। शीघ्र ही वह समय आएगा, जब तुम्हें जेल के बाहर जाना होगा; क्योंकि मैं नहीं चाहता कि इस बार तुम्हें सजा हो या तुम अपना समय, औरों की तरह अपने देश के लिये कष्ट सहते हुए बिताओ। मैंने तुम्हें काम के लिये बुलाया हैं और यही वह आदेश है जो तुमने माँगा था। मैं तुम्हे आदेश देता हूँ कि जाओ और मेरा काम करो।''

दूसरा संदेश आया, वह इस प्रकार था, ''इस एक वर्ष के एकांतवास में तुम्हें कुछ दिखाया गया है, वह चीज दिखायी गयी है, जिसके बारे में तुम्हें संदेह था, वह है हिंदू धर्म का सत्य। इसी धर्म को मैं संसार के सामने उठा रहा हूँ, यही वह धर्म है जिसे मैंने ऋषि-मुनियों और अवतारों के द्वारा विकसित किया और पूर्ण बनाया है और अब यह धर्म अन्य राष्ट्रों में, मेरा काम करने के लिये बढ़ रहा हैं।

मैं अपनी वाणी का प्रसार करने के लिये इस राष्ट्र को उठा रहा हूँ। यही वह सनातन धर्म है जिसे तुम सचमुच

पहले नहीं जानते थे, किंतु जिसे अब मैंने तुम्हारे सामने प्रकट कर दिया है। तुम्हारे अंदर जो नास्तिकता थी, जो संदेह था उनका उतर दे दिया है, क्योंकि मैंने अंदर और बाहर, स्थूल और सूक्ष्म, सभी प्रमाण दे दिये गये हैं और उनसे तुम्हें संतोष हो गया है।

जब तुम बाहर निकलो तो सदा राष्ट्र को यह वाणी सुनाना कि वे सनातन धर्म के लिए उठ रहे हैं, वे अपने लिये नहीं बल्कि संसार के लिये उठ रहे हैं। मैं उन्हें संसार की सेवा के लिये स्वतंत्रता दे रहा हूँ।

अतएव जब यह कहा जाता है कि भारत वर्ष ऊपर उठेगा तो इसका अर्थ होता है सनातन धर्म महान् होगा। जब यह कहा जाता है कि भारत वर्ष बढ़ेगा और फैलेगा तो इसका अर्थ होता है सनातन धर्म बढ़ेगा और संसार पर छा जायेगा।

''धर्म के लिये और धर्म के द्वारा ही भारत का अस्तित्व है।'' धर्म की महिमा बढ़ाने का अर्थ है देश की महिमा बढाना। मैंने तुम्हें दिखा दिया है कि मैं सब जगह हूँ, सभी मनुष्यों और सभी वस्तुओं में हूँ। मैं इस आंदोलन में हूँ और केवल उन्हीं के अंदर कार्य नहीं कर रहा, जो देश के लिये मेहनत कर रहे हैं बल्कि उनके अंदर भी जो उनका विरोध करते और मार्ग में रोड़े अटकाते हैं।

मैं प्रत्येक व्यक्ति के अंदर काम कर रहा हूँ और मनुष्य चाहे जो कुछ सोचें या करें, पर वे मेरे हेतु की सहायता करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं कर सकते। वे भी मेरा ही काम कर रहे हैं; वे मेरे शत्रु नहीं बल्कि मेरे यंत्र हैं। तुम यह जाने बिना भी कि तुम किस ओर जा रहे हो, अपनी सारी क्रियाओं के द्वारा आगे बढ़ रहे हो।

तुम करना चाहते हो कुछ और, पर कर बैठते हो कुछ और। तुम एक परिणाम को लक्ष्य बनाते हो और तुम्हारे प्रयास ऐसे हो जाते हैं जो उनसे भिन्न या उल्टा परिणाम लाते हैं। शक्ति का अविर्भाव हुआ है और उसने लोगों में प्रवेश किया है। मैं एक जमाने से इस उत्थान की तैयारी करता आ रहा हूँ और अब यह समय आ गया है। अब मैं ही इसे पूर्णता की ओर ले जाऊँगा।''

❖❖❖

www.the-comforter.org

दिव्य प्रेम

(अप्रैल १२, १६०० को सैन फ्रान्सिस्को क्षेत्र में दिया गया भाषण) विवेकानन्द साहित्य-भाग 3)

(त्रिकोण को प्रेम का प्रतीक माना जा सकता है। पहला कोण है,) प्रेम प्रश्न नहीं करता। वह भिखारी नहीं होता।...भिखारी का प्रेम बिल्कुल प्रेम नहीं है ।प्रेम का पहला चिह्न है, कुछ न माँगना, सब कुछ अर्पित करना। यह है सच्ची आध्यात्मिक उपासना, प्रेम के द्वारा उपासना । अब यह प्रश्न ही नहीं उठता कि ईश्वर दयालु है या नहीं। वह ईश्वर है। वह मेरा प्रेमपात्र है। ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वसमर्थ, ससीम अथवा असीम है, यह प्रश्न अब नहीं रहता ।यदि वह शुभ का वितरण करता है तो ठीक; यदि वह अशुभ लाता है तो उससे क्या ? केवल एक...अनन्त प्रेम.. के अतिरिक्त उसके सब गुण विलीन हो जाते हैं।

प्राचीन काल में एक भारतीय सम्राट् था, जिसे शिकार-यात्रा में वन में एक महान् साधु मिले। वह इन साधु से इतना प्रसन्न हुआ कि उसने आग्रह किया कि वह कुछ भेंट स्वीकार करने के लिए राजधानी पधारें। (पहले तो) साधु ने अस्वीकार किया। पर जब सम्राट् ने बहुत आग्रह किया तो अंत में साधु ने मान लिया। जब वह (राजभवन) पहुँचा, तो सम्राट् को उसका समाचार दिया गया ।सम्राट् ने कहा, ''एक क्षण ठहरिए, मैं अपनी उपासना पूरी कर लूँ।''सम्राट् ने प्रार्थना की, ''हे ईश्वर, मुझे अधिक धन, अधिक (जमीन, अधिक स्वास्थ्य), अधिक संतान दो।'' साधु उठ खड़ा हुआ और कमरे से बाहर जाने लगा। सम्राट ने कहा, ''आपने मेरी भेट तो ग्रहण ही नहीं की।''साधु ने उत्तर दिया, ''मैं भिखारियों से दान नहीं लेता।इतनी देर से तुम अधिक जमीन के लिए, अधिक धन के लिए, इसके लिए, उसके लिए, प्रार्थना कर रहे हो। तुम मुझे क्या दे सकते हो ? पहले स्वयं अपनी जरूरतें पूरी करो।''

प्रेम कभी माँगता नहीं; वह सदा देता है।...जब एक युवक अपनी प्रेमिका से मिलने जाता है,...तो उनके बीच व्यावसायिक संबंध नहीं होता; उनका संबंध प्रेम का होता है, और प्रेम भिखारी नहीं है। (इसी प्रकार), हम समझे कि सच्ची आध्यात्मिक उपासना के आरम्भ का अर्थ भिक्षाटन नहीं होता। जब हम सब भीख माँगना 'हे ईश्वर, मुझे यह दे, मुझे वह दे' समाप्त कर देते हैं, तभी धर्म का आरम्भ होगा।

दूसरा (प्रेम के त्रिकोण का कोण) यह है कि प्रेम में भय नहीं होता। तुम मुझे काटकर टुकड़े टुकड़े कर दो, मैं तब भी तुमसे प्रेम करूं (गा)। मान लो कि तुम माताओं में से कोई एक माता, एक अबला नारी, सड़क पर एक शेर को अपनी सन्तान पर झपटते देखती है। मैं जानता हूँ कि उस समय तुम कहाँ होगी; तुम शेर का सामना करोगी। दूसरी बार गली में एक कुत्ता आ जाता है, तो तुम भाग निकलोगी । पर तुम शेर के मुँह में कूद पड़ती हो और अपने बच्चे को उसके मुँह से छीन लेती हो। प्रेम, डरना नहीं जानता। वह सब बुराइयों पर विजय पाता है ।ईश्वर का भय धर्म का आरम्भ है, पर ईश्वर का प्रेम भय का अंत है ।सम्पूर्ण भय का विनाश हो जाता है।

तीसरा (प्रेम के त्रिकोण का कोण) यह है कि प्रेम स्वयं अपना साध्य है। वह कभी साधन नहीं बन सकता, जो मनुष्य यह कहता है, ''मैं तुम्हें अमुक बात के लिए प्रेम करता हूँ'', वह प्रेम नहीं करता। प्रेम कभी साधन नहीं बन सकता; उसे पूर्ण साध्य होना चाहिए। प्रेम का साध्य और ध्येय क्या है ? ईश्वर से प्रेम करना, बस, यही। कोई ईश्वर से प्रेम क्यों करे ? यहाँ क्यों नहीं चलेगा, इसलिए कि यह साधन नहीं है । जब कोई मनुष्य प्रेम कर सकता है, तो वही मुक्ति है, वही पूर्णता है, वही स्वर्ग है। इससे अधिक और क्या है ? इसके अतिरिक्त उद्देश्य और क्या हो सकता है ? प्रेम से अधिक ऊँचा तुम और क्या पा सकते हो ?

मैं उसके बारे में बात नहीं कर रहा हूँ, जिसे हम सभी प्रेम का अर्थ समझते हैं। छोटा हल्का-फुल्का प्रेम सुहावना लगता है। नर नारी के प्रेम में पड़ता है। और नारी नर के लिए मरने लगती है। हो सकता है कि पाँच मिनट में जॉन जेन को लात लगाये और जेन जॉन को लतियाये। यह भौतिकता है, प्रेम बिल्कुल नहीं। यदि जॉन वास्तव में जेन से प्रेम कर सकता है तो वह उस क्षण पूर्ण हो जायेगा। उसकी सच्ची प्रकृति प्रेम है: वह अपने में पूर्ण है। जॉन को केवल जेन से प्रेम करने से ही योग की सब शक्तियाँ प्राप्त हो जायेंगी, चाहे उसे धर्म, मनोविज्ञान अथवा पुराण का एक शब्द भी न आता हो।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

युग परिवर्तन अनिवार्य है

समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

कालचक्र अबाध गति से निरन्तर चलता ही रहता है। संसार की हर वस्तु परिवर्तन शील है। **शक्ति संतुलन ही शान्ति का द्योतक है।** असंतुलन ही अशान्ति और दुःखों का कारण है। मानव जाति में आज जो अशान्ति नजर आ रही है, वह असंतुलन का ही कारण है। आज तो स्थिति यह है कि तामसिकता का पलड़ा बहुत भारी है।

संसार भर की राज सत्ता पर, वह शक्ति निरंकुश होकर एक छत्र शासन कर रही है। हम देख रहे हैं कि हमारे देश के सत्ताधारी वर्ग इसी प्रकार के तांत्रिकों का आशीर्वाद प्राप्त करने को भटकते रहते हैं। इस प्रकार तामसिकता के प्रभाव में उन्हें जो करना चाहिए, वही वे बेचारे करने को विवश हैं।

संसार में जब तक यह वर्ग सात्विक सत्ता के दिशा निर्देश से काम नहीं करने लगेंगे, तब तक शांति पूर्ण रूप से असम्भव है। **तामसिक शक्तियाँ, चोर शक्तियाँ हैं। वे हमेशा नकली संत का भेष बनाकर धोखा देती है।** सारी गड़बड ईश्वर की आड़ लेकर कर रही है। एक साधारण व्यक्ति भी कर्ण पिशाचनी की सिद्धि करके संसार को मूर्ख बनाकर एक सिद्ध पुरुष के रूप में ख्याति प्राप्त करके पूजा जा रहा है। तामसिकता का एक छत्र साम्राज्य होने के कारण लोगों की बुद्धि ऐसी भ्रमित कर रखी है कि वे भले बुरे की पहचान ही नहीं कर सकते। **क्योंकि कुए में ही भांग पड़ी हुई है।** अतः जिधर देखो उन्ही के झुण्ड नजर आते हैं। अब ऐसी तामसिक **शक्तियों** का अत्याचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका है। मैं ऐसे कई सज्जन लोगों से मिला हूँ, जब वे किसी संत के चमत्कारों की प्रशंसा करके उसके गुणों का बखान करते हैं तो मुझे उन सीधे-साधे और ईश्वर के प्रति जिज्ञासु लोगों पर बहुत तरस आता है।

मैं चुपचाप सुनकर हँस देता हूँ। सभी घटी हुई घटना को इस प्रकार बताते हैं कि बेचारे भोले भाले लोग उनको अच्छा संत समझ कर, अच्छी भेंट पूजा करते हैं। कर्ण पिशाचनी अपने सीमित दायरे के अन्दर साधारण व्यक्ति के मन की बात जान कर, उस व्यक्ति को बताने में सक्षम होती है जिसके अधीन वह कार्य करती है।

अब वह तथाकथित संत जितना अधिक चतुर होगा उतना ही भौतिक लाभ उठाते हुए पर्दे के पीछे असलियत को छिपाये रखेगा। आध्यात्मिकता के नाम पर आज इसी शक्ति का बोलबाला है। **अन्धों में काणा ही राजा होता है,** ठीक वही हालत आज संसार में आध्यात्मिक क्षेत्र में सर्वत्र व्याप्त है। **''धर्म प्रत्यक्षानुभूति का विषय है। इसमें उपदेश और अन्य भौतिक चमत्कार होते ही नहीं।''** जिस प्रकार सूर्य के निकलते ही अन्धकार पूर्ण रूप से समाप्त हो जाता है, और किसी को कुछ भी वस्तु दिखाने की

जरूरत नहीं होती, हर व्यक्ति स्वतः ही स्वयं हर वस्तु को देखने में सक्षम हो जाता है। उस परम सत्ता से जुड़े हुए संत के साथ क्षणभर ही सत्संग करने से मनुष्य के अन्दर ऐसी रोशनी प्रकट हो जाती है कि उसे बताने की कोई आवश्यकता ही नहीं होती। उसका **पथप्रदर्शन स्वयं सात्विक शक्तियाँ** करने लगती हैं। क्योंकि प्रकाश होने पर अंधेरा भग जाता है, ठीक वैसे ही उस व्यक्ति में सात्विक शक्तियों के

www.the-comforter.org

चेतन होते ही तामसिक शक्तियाँ कोसों दूर भाग जाती हैं।

ऐसी स्थिति में जब उसे स्वयं सब दिखने लगता है तो फिर उपदेश किस काम का। **उपदेश तो मात्र झूठी सांत्वना का नाम है।** उपदेश तो क्षणिक लाभ का प्रलोभन मात्र है। मैं देखता हूँ, संसार के अरबों लोग उपदेश सुन चुके हैं। अगर उससे कुछ लाभ होता तो आज संसार की ऐसी बुरी हालत कभी नहीं होती।

इस युग की भौतिक सत्ता पर पूर्ण रूप से तामसिक शक्तियों का अधिकार है। तामसिक शक्तियाँ अपने गुणधर्म के ही अनुसार उसका उपयोग कर रही हैं। यही कारण है कि भौतिक विज्ञान, प्राणियों के संहार के लिए काम में लिया जा रहा है। अगर संसार की राज सत्ता पर सात्विक शक्तियों का प्रभाव हो जाय तो स्थिति बिलकुल विपरीत हो जाएगी।

इस समय तो बन्दर के हाथ में उस्तरा आने वाली स्थिति है। तामसिक शक्तियों ने भौतिक और आध्यात्मिक जगत् के लोगों के बीच में ऐसी झूठी काल्पनिक लक्ष्मण रेखा खींच दी है कि एक दूसरे के क्षेत्र दो भागों में बाँट दिये।

संन्यासी लोग कहते हैं कि राज सत्ता को उनके क्षेत्र में बिल्कुल हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं। दूसरी तरफ राज सत्ता के लोग खुला आरोप लगा रहे हैं कि धर्म गुरु राज सत्ता को प्रभावित करने के लिए धर्म का दुरूपयोग कर रहे हैं। इस प्रकार इन तामसिक शक्तियों ने दोनों वर्गों को अपने प्रभाव में लेकर, इतना भयंकर संघर्ष प्रारम्भ करवा दिया है कि किसी को समझने का अवसर ही नहीं देती है। तामसिक शक्तियों ने इस प्रकार संसार के जीवों को कष्ट देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

सारे संसार में जो ताण्डव नृत्य तामसिक शक्तियाँ करने लगी हैं उसको देखने से ऐसा लगता है कि अब इनका अन्त बहुत निकट आ चुका है। हर कार्य की अति उसकी आखिरी सीमा होती है। श्री अरविन्द ने कहा है जब संसार की भौतिक सत्ता पर आध्यात्मिक सत्ता का शासन नहीं होगा, शान्ति असम्भव है। इस समय संसार के तथाकथित धर्माचार्यों और संतों ने तामसिक शक्तियों के प्रभाव के कारण पलायन वादी रुख अपना रखा है, वह बिल्कुल गलत है। संत और धर्म गुरु मानव मात्र का दुःख दूर करने के लिए भेजे जाते हैं। संसार से दूर भागने का अर्थ है वह तामसिक शक्तियों से या तो भयभीत है, या इतने उनके अधीन हो चुके कि उनका हर आदेश मान कर वे ऐसा कर रहे हैं।

सत्युग में हर प्राणी मात्र का सीधा सम्पर्क उस परमसत्ता से होता था, ऐसी स्थिति में सभी संत थे। युग के परिवर्तन के साथ-साथ ज्यों-ज्यों जीव उस परमसत्ता से दूर हटता गया, संतों ने प्रकट होकर लोगों का पथ प्रदर्शन किया, त्रेता और द्वापर में हमें ऐसे असंख्य उदाहरण मिलते हैं। परन्तु धीरे-धीरे तामसिकता का शिकंजा मजबूत होता चला गया और आज ऐसा समय आ गया है कि एक मात्र उन्हीं शक्तियों का साम्राज्य है।

तामसिकता की अति हो चुकी है। यही कारण है कि इनका अन्त होने वाला है। संसार के कई आध्यात्मिक संत ऐसी भविष्यवाणियाँ कर चुके हैं। पिछले कुछ समय से तो हमारे देश के सत्ता पक्ष के लोगों ने भी ऐसी बातें करनी प्रारम्भ कर दी है, जिसे सुनकर अचम्भा होता है। 21 वीं सदी के भारत की तस्वीर जब सत्ता पक्ष दिखाता है तो तामसिक लोग इसका मजाक उड़ाते हैं। मुझे यह देखकर अचम्भा हो रहा है कि इस परमसत्ता ने कैसे सत्ता पक्ष से सच्चाई उगलवानी प्रारम्भ कर दी है।

यह कटुसत्य है कि वह शक्ति का सूर्य उदय होने ही वाला है। सूर्योदय का आभास काफी पहले होने लगता है। मनुष्य ही नहीं प्राणिमात्र के अन्दर से आलस्य समाप्त होकर, एक नई चेतना का संचार होने लगता है और सूर्योदय के साथ ही सभी प्राणी सृजन में जुट जाते हैं। समय की दूरी केवल भौतिक जगत् को प्रभावित करती है।

अध्यात्म जगत् में वह पूर्ण रूप से समाप्त हो जाती है। इतने लम्बे समय में भौतिक जगत् में जो उन्नति हुई, अध्यात्म सत्ता को उसे अपने अधीन करने में कुछ भी समय नहीं लगेगा। जो संत उसे बहुत पहले देख चुके थे। **श्री अरविन्द ने इसी कारण 24-11-1926 को भगवान् श्री कृष्ण के अवतरण की स्पष्ट घोषणा कर दी। अपने क्रमिक विकास के साथ शीघ्र ही वह परम सत्ता संसार में अपना प्रकाश फैलाने वाली ही है।**

21-2-1988

❖❖❖

અદ્‌ભૂત સિદ્ધયોગ

સિદ્ધયોગ સાધનામાં પાળવાના નિયમો

(૧) સાધકે ગુરુદેવ સિયાગ પ્રતિ સંપુર્ણ શ્રદ્ધા અને સમર્પણ ભાવ રાખવો સાધકની શ્રદ્ધા અને સમર્પણ જેટલી વધારે હોય તેટલા જ પ્રમાણમાં એને સાધના સફળ થાય છે. જેમબેંક ખાતામાં જીદ્દ્દૈહપ્ત નું રોકાણ ઓછું હોય તો ઓછું વ્યાજ મળે અને વધારે રોકાણ હોય તો વધારે વ્યાજ મળે તેમશ્રદ્ધાના પ્રમાણમાં તેનું ફળ પ્રાપ્ત થાય છે. ગુરુ પર શ્રદ્ધા ના હોય તો કા તો ઓછી હોય તો મંત્રજાપ અને ધ્યાનની અસર જેવી જોઇએ તેવી થતી નથી.

(૨).ગુરુદેવ પાસેથી દીક્ષા લીધા પછી એનું ઇચ્છિત પરિણામમેળવવા માટે સંપુર્ણ શ્રદ્ધા, એકાગ્રતા અને ખંત સિદ્ધયોગ સાધના કરવી. આ સાધના દરમિયાન બીજા કોઇ સંત, ગુરુ, બાબા, ભુવા, તાંત્રિક, માંત્રિક કે ફકીરની પાછળ જવું નહી. પોતે સ્વીકારેલ ગુરુ પર અડીખમરહેવું અને તેની જ આરાધના કરવી. અલગ અલગ ગુરુઓ પાછળ પડવાથી શ્રદ્ધા વહેંચાઇ જાય છે. પરિણામે સાધકના હાથમાં કંઇ જ આવતું નથી. દા.ત. એક ડૉકટરનો અલાજ ચાલતો હોય ત્યારે આપણે બીજા ડૉકટરનો ઇલાજ કરતા નથી. કારણ બંનેની દવા અને ટ્રીટમેન્ટ મીક્ષ થાય તો બીમારી દુર થવાને બદલે વધુ વણસી જવાની શકયતા છે. એટલે એક જ ગુરુ પર શ્રદ્ધા રાખીને સાધના કરવી.

(૩).સિદ્ધયોગ સાધના એ ઇશ્વર પ્રાપ્તિનો સર્વોત્તમમાર્ગ છે. કારણ કે જે બ્રહ્માંડમાં જે તેત્રીસ કરોડ દેવી - દેવતા પૂજાય છે એવા દેવોના દેવ મહાશિવ પાસે સિદ્ધયોગ નો સંતો જાય છે. જેમઆપણને ઝડપી પ્રવાસ માટે હાઇવે મળી ગયો હોય તો આપણે નાના સંતાઓ અને ગલીઓમાં જતાં નથી. એ જ પ્રમાણે સિદ્ધયોગનો સંતો મળઅયા પછી નાના મોટા કર્મકાંડ, મંદિરોના આંટાફેરા અને યાત્રા ધામપ્રવાસ વગેરેની જરૂર રહેતી નથી. બીજા ગુરુઓ કે સંતો અને કર્મકાંડ કરતા લોકો પ્રતિ આદરભાવ જરૂર રાખવો પરંતુ સિદ્ધયોગનો માર્ગ છોડવો નહી.

(૪).સિદ્ધયોગ સાધના એટલે સાક્ષાત ઇશ્વરના અલૌકિક તેની સાધના છે.તેની સામે કોઇ પણ ભૂત-પ્રેત, વળગાડ કે જાદુટોનાની અસર થતી નથી. એથી જ ગુરુદેવ સિયાગના શિષ્યે કોઇ પણ પ્રકારના ધાગા, દોરા, તાવીજ કે યંત્રોના બંધનમાં ફસાવું નહી. આ પ્રકારની કાલા જાદુ અથવા તાંત્રિક, માંત્રિક પાસે જવાથી સિદ્ધયોગ સાધનામાં ખલેલ પડે છે અને સાધક ગંભીર પ્રકારની મુશ્કેલીનો સામનો કરવો પડે છે.

(૫).સિદ્ધયોગ સાધના કરતી વખતે કોઇ બીમારીના કારણે ડૉકટર કે વૈદ્યની દવા લેવી પડે તો જરૂર લેવી. પરંતુ દવાને વળગીના રહેવું. સાધક જેટલી શ્રદ્ધાથી ગુરુદેવને રોગમુક્તિ માટે પ્રાર્થના કરશે એટલા જ ઝડપથી એની બીમારી દવા લીધા વગર મટી ગયાનો અનુભવ તેને થશે. ડૉકટરોએ જે દર્દીઓને જીવતા રહેવાની આશા છોડી દે દીધી હોય આવા અસંખ્ય દર્દીઓ ગુરુદેવ સિયાગના શરણે આવ્યા પછી મૃત્યુના કાંઠેથી પાછા ફરી અને સાજા થઇને નોર્મલ જીવન જીવી રહ્યા છે.

(૬).ભારતીય ધર્મશાસ્ત્રના અનુસાર મનુષ્યના આત્મિક ઉધ્ધાર કરવાની જવાબદારી ઇશ્વરે જેના વાણીમાં સત્યતા હોય એવી ગુરુને સોંપી છે. એટલે જ જે સદ્‌ગુરુ જીવન અને આધ્યાત્મિક જ્ઞાનનું દાન કરે છે એને ઇશ્વર ગણીને પૂજવું.

(૭).ધર્મગ્રંથો પ્રમાણે ગુરુની કૃપા સંપુર્ણ પ્રમાણે પ્રાપ્ત કરવા માટે ગુરુદક્ષિણા આપવી જરૂરી છે. સાધકે યથા શક્તિ તન (શ્રમ), મન (જ્ઞાનનો પ્રચાર), ધન આપીને ગુરુની સેવા કરવી એ જ સાચી ગુરુદક્ષિણા કહેવાય. ભગવાન શ્રીકૃષ્ણે ગીતામાં કહ્યું છે તેમશિષ્ય ગુરુને આદર અને પ્રેમભાવથી જે કાંઇ ભેટ આપે ભલે એ ફુલ જેવી નાનામાં નાની વસ્તુ કેમન હોય એને જ ગુરુદક્ષિણા આપી એવું કહેવાય.

(૮).ગુરુકૃપાથી ભૌતિક લાભ જેવું કે ધન, સાંસારિક સુખ, પુત્ર પ્રાપ્તિ અથવા જમીન જાયદાદ મેળવ્યા બાદ સિદ્ધયોગ સાધના બંધ કરવી અને ગુરુદેવ પ્રતિ શ્રદ્ધા છોડી દેવી એ ઘણું જ અયોગ્ય કહેવાય.

આવું કરવાથી સાધકને મળેલ લાભ લાંબા સમય સુધી ટકતો નથી અને તે સંસારની અનેક મુશ્કેલીઓ પાછો ધકેલાય જાય છે. એટલે જ લાભ મેળવ્યા પછી પણ ગુરુદેવ ઉપર જીવનભર શ્રદ્ધા રાખવી જરૂરી છે.

સિદ્ધયોગ આરાધનામાં આડંબરની જરૂર નથી :

ગુરુદેવ સિયાગે બતાવેલી આરાધના ના વિશિષ્ટતા એ છે કે એમાં કોઇપણ જાતના આડંબરને સ્થાન નથી. આમાં વિશિષ્ટ પ્રકારના કપડા, ખાનપાન કે આસનની જરૂર હોતી નથી. સાધકને જે પહેરાવ ઠીક લાગે તે અને જે જગ્યા અનુકૂળ હોય તે જગ્યાએ સાધક ધ્યાન કરી શકે છે. પછી એ રૂમમાં હોય કે બહાર ખુલ્લામાં બેઠો હોય. ગુરુદેવના ઘણા શિષ્યો પ્રવાસ કરતી વખતે

www.the-comforter.org

'सदगुरुदेव' की सर्वव्यापकता

हमारे विज्ञान में Time (समय) and Space (जगह) की कोई Value (मूल्य) नहीं है। आप मेरे में हो और मैं आप में हूँ। आप जहाँ याद करोगे, मैं वहाँ Present (उपस्थित) रहूँगा। "गुरु", अगर वास्तव में "गुरु" है तो **Omni-present** (सर्वव्यापक) है।

www.the-comforter.org

मुख्यालयः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

21 वीं सदी का भारत

श्री अरविन्द की मान्यता थी कि संसार में शान्ति स्थापित करने में संत-महात्मा और पैगम्बर पूर्णरूपसे असफल हो चुके हैं। अब विश्व में शान्ति का मात्र एक ही रास्ता बचा है कि वह परमसत्ता स्वयं मानवदेह धारण करके पृथ्वी पर अवतरित हो। उस परमसत्ता के अवतरण के लिए ही श्री अरविन्द ने आराधना की और श्री अरविन्द ने अपने जीवनकाल में ही पूर्ण सफलता प्राप्त कर ली। भगवान श्रीकृष्ण ने श्री अरविन्द को जो वरदान दिया, उस सम्बन्ध श्री अरविन्द लिखते हैं— "मैंने मानवता के लिए परात्पर से उतना बड़ा वरदान प्राप्त किया है, जितना यह पृथ्वी मांग सकती थी।" भगवान श्रीकृष्ण ने श्री अरविन्द को जो वरदान दिया, उसके अनुसार— "शीघ्र ही चेतना के ऊर्ध्व-लोक से एक भागवत शक्ति का — अवतरण होगा, जो पृथ्वी पर स्थापित "मृत्यु" और "असत्य" के राज्य को समाप्त कर यहाँ भी "भागवत" के राज्य की स्थापना करेगी।"

श्री अरविन्द को दिये वरदान के अनुसार वह परमसत्ता मानवदेह धारण कर के भारत की पुण्य-भूमि पर अवतरित हो गई। श्री अरविन्द ने उस अवतरण को बहुत ही निकट से देखा और घोषणा कर डाली— "24 नवम्बर 1926 को श्रीकृष्ण का पृथ्वी पर अवतरण हुआ था। श्रीकृष्ण अतिमानसिक प्रकाश नहीं है। श्रीकृष्ण के अवतरण का अर्थ है अतिमानसिक देव का अवतरण जो जगत को अतिमानस और आनन्द के लिए तैयार करता है। श्रीकृष्ण आनन्दमय है। वे अतिमानस को अपने आनन्द की ओर उद्बुद्ध (इन्सपायर) करके विकास का समर्थन और संचालन करते हैं।"

श्री अरविन्द के अनुसार मानवदेह धारण करके भारत की पुण्य-भूमि पर अवतरित वह परमसत्ता 20 वीं सदी के अन्तिम दशक में सम्पूर्ण विश्व के सामने प्रकट हो जायेगी।

इसके अतिरिक्त भगवान श्रीकृष्ण ने अलीपुर जेल में श्री अरविन्द को "योगमुक्त" स्थिति में जो आदेश दिये उनसे भी इस अन्तिम अवतरण अर्थात दशवें अवतार के अवतरण की पुष्टी होती है।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

सिद्धयोग :- शक्तिपात दीक्षा व कुण्डलिनी जागरण

भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति के संबंध में अंतर्मुखी होकर खोज की तो पाया कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड, मनुष्य के शरीर में है। जब हमारे ऋषियों ने और गहन शोध किया तो पाया कि इस जगत् को रचने वाला **सहस्रार** में स्थित है और उसकी **शक्ति मूलाधार** में। इन दोनों के कारण ही संसार की रचना हुई है। उस परम पुरुष की शक्ति, उसके आदेश से नीचे उतरती गई और अलग-अलग बंध लगाकर सभी लोकों की रचना करके मूलाधार में स्थित हो गई। इसके **चेतन** होकर **उर्ध्वगमन** करते हुए सहस्रार में पहुँचने का नाम ही **'मोक्ष'** है। मोक्ष की प्राप्ति जीते जी होती है। मरने के बाद मोक्ष की कल्पना करना, एक **मृगमरीचिका** ही है और कुछ नहीं।

गुरु-शिष्य परंपरा में जो शक्तिपात दीक्षा का विधान है। उसके अनुसार गुरु अपनी शक्ति से कुण्डलिनी को चेतन करके ऊपर को चलाते हैं। गुरु का शक्ति पर पूर्ण **प्रभुत्व** होता है। इसलिए वह उस गुरु के आदेश के अनुसार चलती है। क्योंकि यह सहस्रार में स्थित **परमसत्ता** की **पराशक्ति** है। अतः यह मात्र उसी का ही आदेश मानती है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जिस व्यक्ति को सहस्रार में स्थित **उस परम तत्त्व** की सिद्धि हो जाती है, वही इसका संचालन करने का अधिकारी है। यह शक्ति विश्व में, **एक समय में, मात्र एक ही व्यक्ति** के माध्यम से कार्य करती है। क्योंकि यह **सार्वभौम सत्ता** है, इसलिए वह व्यक्ति विश्वभर में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन करने की सामर्थ्य रखता है।

यह भारतीय दर्शन की विश्व को **अभूतपूर्व** एवं **अद्वितीय** देन है। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के संस्थापक व संरक्षक, प्रवृत्तिमार्गी परम श्रद्धेय समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग अपने सद्गुरुदेव बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी ब्रह्मलीन (जामसर) के आदेशानुसार इस **दिव्य ज्ञान** का **महाप्रसाद** बाँटने, विश्व में **अकेले** ही निकल पड़े हैं।

शक्तिपात से जब कुण्डलिनी शक्ति जाग्रत हो जाती है तो **उर्ध्वगमन** करने लगती है। कई जन्मों के संस्कारों के कारण रास्ता अवरूद्ध रहता है। अतः साधक को विभिन्न प्रकार की यौगिक क्रियाएँ जैसेः- आसन, बंध, मुद्राएँ एवं प्राणायाम स्वतः ही होने लगते हैं। वह शक्ति साधक का शरीर, प्राण, मन और बुद्धि अपने अधीन कर लेती है। इस प्रकार जो क्रियाएँ होती हैं उन्हें साधक न तो करने की स्थिति में होता है और न ही रोकने की। वह शक्ति सीधा अपने नियंत्रण में सभी क्रियाएँ स्वयं करवाती है।

गुरुदेव के अनुसार भौतिक विज्ञान के शोधकर्त्ताओं की असंख्य समस्याओं का समाधान, इस ज्ञान से हो जाएगा। समाधि स्थिति में वह परमसत्ता हर समस्या का समाधान शोधकर्ताओं को करवा देगी। इस प्रकार मनुष्य जाति की असंख्य समस्याओं का समाधान हो जाएगा।

गुरु-शिष्य परंपरा में जिस सिद्धयोग अर्थात् महायोग का वर्णन है, उसके आदि गुरु कैलाशवासी भगवान् पर शिव हैं। शिव से यह ज्ञान अमर कथा द्वारा महायोगी **श्री मत्स्येन्द्र नाथ** जी को मिला। उनके परम शिष्य महायोगी श्री गोरखनाथजी ने इस सिद्धयोग से संसार का जो कल्याण किया है, वह सर्वविदित है। यह योग संसार के त्रिविध तापों-**आदि भौतिक, आदि दैहिक व आदि दैविक (Physical, Mental & Spiritual)** का शमन (नाश) करता है।

इसलिए संसार की कोई भी असाध्य बीमारी व वैज्ञानिक समस्या नहीं है; जिसका सिद्धयोग में समाधान न हो ? **अर्थात् सिद्धयोग में सब कुछ संभव है जो सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग की शक्तिपात दीक्षा से मानवता में मूर्तरूप ले रहा है।**

सिद्धयोग से लाभ

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग से मंत्र दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके चित्र का नियमित ध्यान एवं नाम जप द्वारा मातृशक्ति कुण्डलिनी के जागरण से साधक में निम्न परिवर्तन आ जाते हैं-

- **सभी प्रकार के असाध्य रोगों जैसेः-एड्स, कैंसर, डायबिटीज, टी.बी, दमा, ब्लड प्रेशर, मिर्गी, बवासीर, हीमोफीलिया, हेपेटाइटिस व गठिया आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।**
- **सभी प्रकार के मानसिक रोगों जैसेः-तनाव, पागलपन, उन्माद, फोबिया (भय), चिंता, अनिद्रा आदि से पूर्ण मुक्ति संभव।**
- **सभी प्रकार के नशों जैसेः- शराब, अफीम, हेरोइन, भांग, तम्बाकू (बीड़ी, सिगरेट व जर्दा) आदि से बिना किसी परेशानी के छुटकारा।**
- **विद्यार्थियों की एकाग्रता एवं याद्दाश्त में नाम जप व ध्यान द्वारा अभूतपूर्व वृद्धि।**
- **आध्यात्मिकता के पूर्ण ज्ञान के साथ भूत, वर्तमान एवं भविष्य की घटनाओं को ध्यान के समय प्रत्यक्ष देखना और सुनना।**
- **गृहस्थ जीवन में रहते हुए 'भोग एवं मोक्ष' दोनों तत्त्वों की सहज प्राप्ति। इसके साथ ही जीवन की समस्त सांसारिक परेशानियों से छुटकारा।**
- **वैदिक दर्शन द्वारा ईश्वर की प्रत्यक्षानुभूति एंव साक्षात्कार।**

www.the-comforter.org

विश्व में परिवर्तन का जो तूफान आरम्भ हो गया है, वह उन्हें क्या ऐसा करने देगा? संसार में धर्म और जाति के नाम पर जो नया ध्रुवीकरण प्रारंभ हो गया है, उसकी गति तेज होती ही जावेगी। **यह भी संभव है कि यह संकीर्ण ध्रुवीकरण ही विश्व के महाविनाश का मुख्य कारण बन जाए।**

संसार भर के सभी धर्म जब तक **''सर्वं खाल्विदं ब्रह्म''** के वैदिक सिद्धांत को पूर्ण सत्य मानकर उसके अनुसार आचरण प्रारम्भ नहीं करेंगे, तब तक शांति केवल कल्पना का ही विषय रहेगी। सभी धर्मों के धर्माचार्यों की कथनी और करनी में भारी अंतर है। सभी मूलभूत सिद्धातों को मानने का मात्र झूठा स्वांग रच रहे हैं। संसार में मोटे तौर से तीन बल- **धनबल, जनबल और मनबल** माने गये हैं। इस समय संसार पूर्णरूप से पहले दो बलों (शक्तियों) का ही उपयोग कर रहा है। हम स्पष्ट देख रहे हैं, **'धनबल'** अपनी सुरक्षा के लिए **'जनबल'** का उपयोग ढाल (**कवच**) के रूप में कर रहा है। इस प्रकार हम देख रहे हैं कि **'धन'** (माया) का संसार पर एक छत्र साम्राज्य है। इस संबंध में मुझे मेरे एक मित्र की राजस्थानी भाषा की एक कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आ गई। कविता का शीर्षक था-

''लिछमी''

हद हुकम हेकड़ी आ लिछमी
मिनखां ने नाच नचावे है,
कोई भूखा मरे,कोई मोज करे,
कोई नर माटी बण जावे है,
आ-लिछमी बड़ी बावळी-गेली
मिनखा जींवता खावे है।

आध्यामिक जगत् के लोग, धर्म के नाम पर केवल अतीत के गुणगान मात्र करके इतिश्री कर रहे हैं। जबकि हमारे दर्शन के अनुसार **'ईश्वर' प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार का विषय है।** 'मनबल', जो कि हमारे दर्शन के अनुसार **सर्वोत्तम-बल** है, संसार से लोप प्राय: हो चुका है। भारत मनबल के सहारे ही अनादिकाल से विश्व द्वारा पूजा जाता रहा है, और पुन: उसी के सहारे ही अपने **स्वर्णयुग** में प्रवेश करेगा।

महर्षि श्री अरविन्द ने इस संबंध में कहा है- ''पश्चिम के लोग भौतिक जीवन को उसकी चरम सीमा तक पहुँचा चुके हैं। अब एक ऐसी चीज की जरूरत है, जिसे देना उनके वश की बात नहीं है। क्योंकि यह कार्य **आत्मा और अंत:चेतना की अभिवृद्धि** द्वारा ही होगा, और इसका प्रारंभ भारत ही करेगा।'' इसके साथ ही महर्षि ने भारत के भविष्य के बारे में स्पष्ट शब्दों में कहा है- ''**भारत, जीवन के सामने 'योग' का आदर्श रखने के लिए उठ रहा है।** वह **'योग'** के द्वारा ही सच्ची स्वाधीनता, एकता और महानता प्राप्त करेगा और **'योग'** के द्वारा ही उसका रक्षण करेगा।''

पुस्तक लिखने का यह प्रयास मात्र विश्व के जिज्ञासु जनों को सप्रेम आमंत्रित करना हैं। दूसरी पुस्तकों की तरह यह भी उस दिव्यज्ञान की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार नहीं करवा सकेगी। मनुष्य को उस दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने के लिए तो अपने शरीर-रूपी ग्रन्थ को ही पढ़ना पड़ेगा, क्योंकि उसका निवास हमारे शरीर में ही है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के 18वें अध्याय के 61 वें श्लोक में स्पष्ट कहा है-

ईश्वर:सर्वभूतानां
हृदेशे अर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि
यन्त्रारुढ़ानि मायया।।

हे अर्जुन ! शरीररूपी यंत्र में आरूढ़ हुए संपूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से भरमाता हुआ, सब भूतप्राणियों के हृदय में स्थित है। ईसाइयों के पवित्र धार्मिक ग्रंथ बाइबल में भी इस संबंध में 2 कुरिन्थियों के 6' 16 में स्पष्ट कहा है:- ''और मूरतों के साथ परमेश्वर का क्या संबंध? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मंदिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा कि मैं उनमें बसूँगा और उनमें चला- फिरा करूँगा; मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे।''

यीशु मसीह सहित संसार के प्राय: सभी भविष्यद्रष्टाओं ने एक स्वर में यही कहा है कि 20 वीं सदी का आखिरी दशक संसार में अभूतपूर्व क्रांतिकारी परिवर्तन लावेगा। सभी ने एक ही स्वर में भविष्यवाणी की हैं कि 21 वीं सदी में भारत अपने स्वर्णयुग में पुन: प्रवेश कर जावेगा, **और धर्म और कर्म के क्षेत्र में सम्पूर्ण विश्व का नेतृत्व करने लगेगा।**

पवित्र धार्मिक ग्रंथ बाइबल विश्व-व्यापी भीषण नरसंहार की जो घोषणा करता है, विश्व के अविश्वासी नास्तिक उसकी तरफ ध्यान दें या न दें, उसमें कोई अन्तर नहीं आने वाला है। क्या मृत्यु ने कभी किसी को माफ किया है? कालचक्र अनादिकाल से सबको निगलता आया है और निगलता रहेगा। उस निर्दोष पवित्रात्मा यीशु मसीह ने प्राणरक्षा के लिए कैसी करुण पुकार की थी, परन्तु फिर भी क्या वह अपने प्राण बचा सका?

''तब उसने कहा, मेरा जी बहुत उदास है, यहाँ तक कि मेरे प्राण निकलता चाहते हैं, तुम ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो। फिर वह थोड़ा और

www.the-comforter.org

आगे बढ़कर, मुँह के बल गिरा और यह प्रार्थना करने लगा कि हे मेरे पिता ! यदि हो सके तो यह कटोरा मुझसे टल जाए तो भी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।''

बाइबल अपनी भविष्यवाणियों के संबंध में स्पष्ट कहती है कि **''प्रभु का दिन चोर की नाई(तरह) आवेगा।''** उन दिनों में कितना भयंकर संकट होगा, उस संबंध में कहा है-''क्योंकि वे दिन ऐसे क्लेश के होंगे कि सृष्टि के आरम्भ से, जो परमेश्वर से सृजी है, अब तक न तो हुए, और न फिर कभी होंगे। और यदि प्रभु उन दिनों को न घटाता तो कोई भी प्राणी न बचता, परन्तु उन चुने हुओं के कारण, जिनको उसने चुना है, उन दिनों को घटाया हैं।'' उन दिनों में मानव को कितना भयंकर कष्ट होगा, उसका अन्दाज बाइबल की निम्नलिखित पंक्तियों से लगाया जा सकता है- **''उन दिनों में मनुष्य मृत्यु को ढूँढेंगे,और न पाएँगे,और मरने की लालसा करेंगे,और मृत्यु उनसे (दूर) भागेगी ।''**

बाइबल का उपर्युक्त वर्णन कितना दिल दहलाने वाला है, कहने की आवश्यकता ही नहीं। परन्तु इस पवित्र ग्रंथ को मानने वालों की वस्तु-स्थिति को ध्यान से देखा जाए तो ऐसा लगेगा कि अब प्रलय का समय अधिक दूर नहीं है। धार्मिक स्थानों में जो कुछ भी होता है, उस पर कितने सुंदर ढंग से पर्दा डाला गया है- '' परमेश्वर का परिवार पापियों से मिलकर बना है। यदि आप परमेश्वर के परिवार के लोगों में पूर्ण या लगभग-पूर्ण लोग देखने की अपेक्षा करते हैं तो आपको निराश होना पड़ेगा।'' यह कलियुग के गुणधर्म के कारण है। प्रायः सम्पूर्ण विश्व की एक जैसी ही स्थिति है। मैं तो इस संबंध में सिर्फ इतना ही कहना चाहूँगा कि प्रभु विश्व भर के सकारात्मक विचारों वाले मनुष्यों को शीघ्र सद्बुद्धि प्रदान करें क्योंकि नकारात्मक विचारों वाले व्यक्ति न कभी सुधरे हैं, और न कभी सुधरेंगे। रावण,कंस,दुर्योधन आदि अनेक उदाहरण हर युग में मिलेंगे।''

इस संयुक्तांक में सद्गुरुदेव द्वारा लिखित अपने जीवन के संपूर्ण अनुभवों व लेखों को विस्तार से दिया गया है। आशा करता हूँ कि सूंपर्ण मानव जाति को इस जानकारी से सत्य का मार्गदर्शन मिलेगा। अन्तर्मुखी आराधना द्वारा अपने भीतर की गहराइयों में उतर कर जीवन के परम लक्ष्य **'मोक्ष'** को पा सकेगा तथा वैदिक दर्शन के महावाक्य **'तत्त्वमसि'** (तू वही है....) के स्वरूप को जान पाएगा। संत कबीरदास जी के इन्हीं शब्दों के साथ कि -

मेरा मुझमें कछु नहीं,
जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझको अर्पण,
क्या लागे मेरा।।

सद्गुरु देव के श्री चरणों में सादर समर्पित है। **-सम्पादक**

www.the-comforter.org

''मनुष्य जीवन का स्थिर लक्ष्य''

एक दिन गया तो महात्मा जी रामायण का पाठ कर रहे थे। हम भिक्षा एक ओर रखकर थोड़ी देर के लिए रामायण सुनने बैठ गए। वनवास से लक्ष्मण जी की सेवा का प्रसंग चल रहा था।

महात्मा जी ने कहा, ''लक्ष्मण जी के लिए रामजी , उन के भ्राता-सेव्य, आदर्श सब कुछ थे। उन्होंने आजीवन राम जी की सेवा के समक्ष अन्य किसी कर्तव्य को महत्त्व नहीं दिया। जीवन की सार्थकता इसी में है कि मनुष्य अपने लक्ष्य को स्थिर कर, उसी की पूर्ति में प्रयासरत् बना रहे। किन्तु यह लक्ष्य जगत् में नहीं, जगदातीत होना चाहिए।

संदर्भ-स्वामी शिवोमतीर्थ महाराज, अंतिम रचना पुस्तक से

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

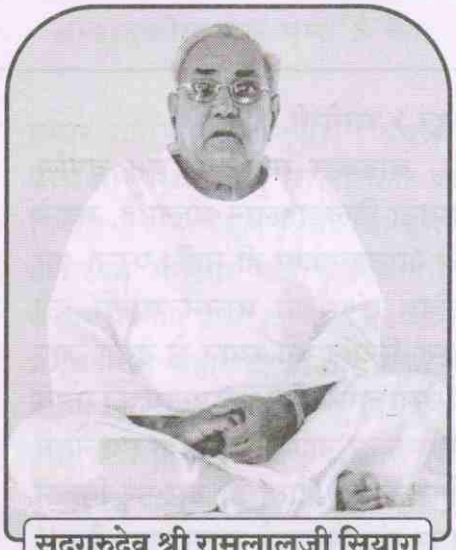

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

ध्यान की विधि

गुरूदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणयाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

Method of Meditation

*Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker **'Mantra'** chanting and **'Meditation'**.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

www.the-comforter.org

शक्तिपात-दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति-धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

जालोर जिले की रानीवाड़ा व सांचौर तहसील तथा गुजरात के थराद कस्बे के विभिन्न विद्यालयों में सिद्धयोग शिविर आयोजित। (29 सितम्बर से 8 अक्टूबर 2018 तक)

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

जोधपुर शहर में प्रत्येक रविवार को प्रात:कालीन, राजस्थान पत्रिका द्वारा आयोजित हमराह कार्यक्रम में जोधपुर आश्रम द्वारा सिद्धयोग शिविरों का आयोजन कर सैकड़ों लोगों को सिद्धयोग दर्शन से रूबरू कराया गया। (अक्टूबर 2018)

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी

पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान् _____

_____

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी